लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

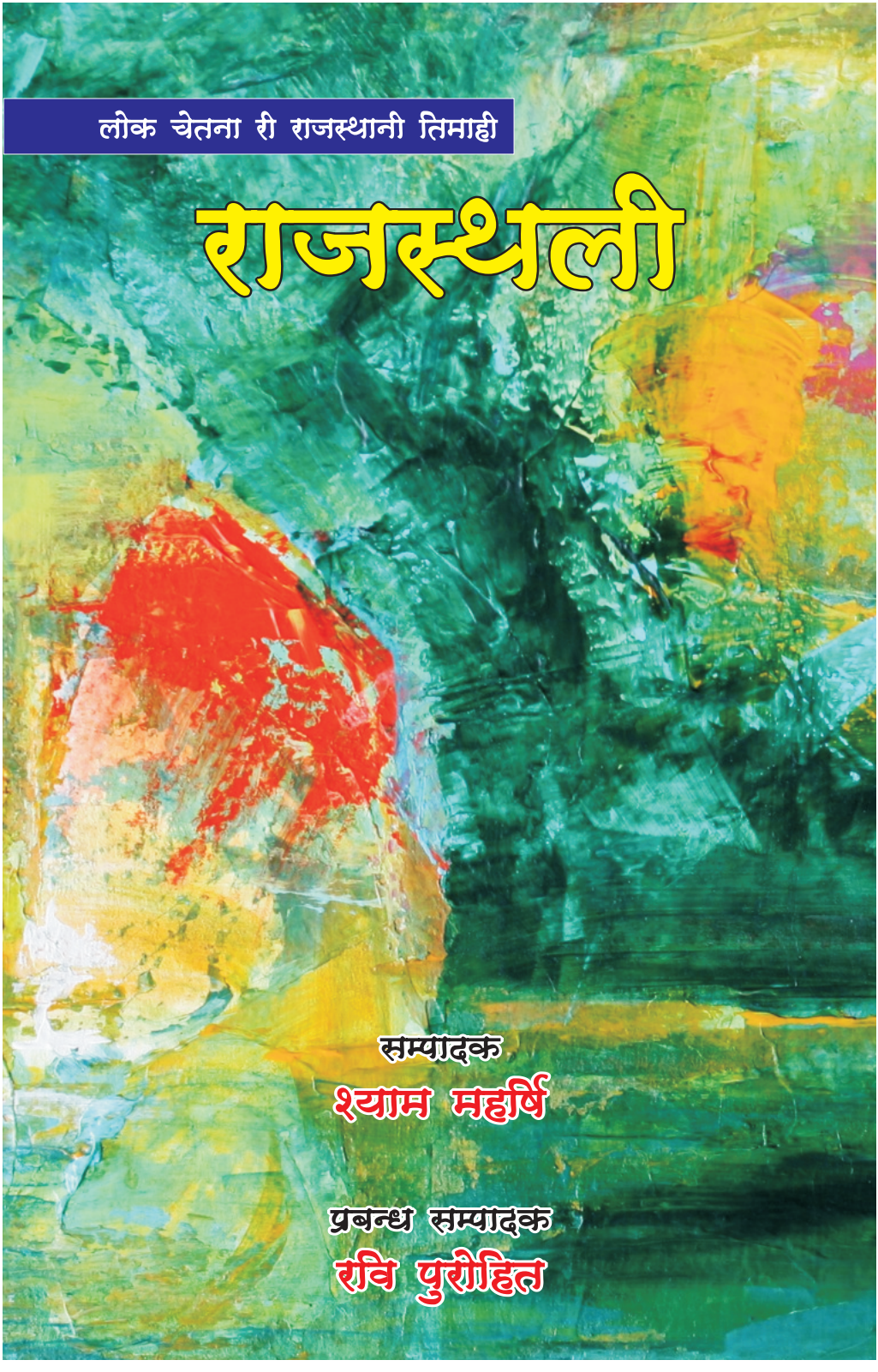

सम्पादक

श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक

रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जनवरी-मार्च, 2020

बरस : 43 अंक : 2 पूर्णांक : 146

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
राजस्थानी साहित्य-संस्कृति पीठ
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com
ravipurohit4u@gmail.com

रेखाचित्राम
प्रवेश सोनी, कोटा
9782045060

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

मातृभासा दिवस रै मौकै सरकार रो सरावणजोग पांवडो — *श्याम महर्षि* — 3

कहाणी

ढळतै सूरज रो उजास — *शकुंतला पालीवाल* — 4

गिरस्थी रो जंजाळ — *देवकिशन राजपुरोहित* — 11

अनूदित कहाणी

सुखमय जीवण (चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी') — *उल्थो : डॉ. मनमोहन लटियाल* — 15

निबंध

सबदां रो सफर — *डॉ. मंगत बादल* — 20

डायरी

व्यक्तित्व नैं निखारै है साहित्य — *माधव नागदा* — 26

व्यंग्य

पाणी पैलां पाळ — *बसंती पंवार* — 32

संस्मरण

ओळूं — *मान कंवर 'मैना'* — 36

कवितावां

लुकमींचणी / माटी रो हेलो / हूंस / साची बात — *डॉ. आशा शर्मा* — 38

बंजर आंख्यां उखड़ी सांसां / बदळाव / म्हारै देस में खेजड़ी अर थूं — *डॉ. आशाराम भार्गव* — 40

दूहा

संवादपरक दूहा — *भंवरलाल सुथार* — 42

गजल

चार गजलां — *अब्दुल समद 'राही'* — 45

कूंत

म्हारी दीठ में 'उजास उच्छब' — *दीनदयाल ओझा* — 47

मातृभासा दिवस रै मौकै सराकार रो सरावणजोग पांवडो

21 फरवरी नैं अंतरराष्ट्रीय मातृभासा दिवस है, जको आखै जगत में आप-आपरी भासा रा हिमायती घणै हरख अर उमाव सूं मनावै। राजस्थान में पैली वळा किणी सरकार प्रदेस रा सरकारी अर गैर सरकारी महाविद्यालयां मांय मातृभासा दिवस सूं अेक दिन पैली 'राजस्थानी भाषा दिवस' मनावण रो फरमान जारी करयो है जको राजस्थानी री संवैधानिक मान्यता सारू अेक औरूं सारथक पांवडो कैयो जाय सकै। इण सारू राज्य रा उच्च शिक्षामंत्री श्री भंवरसिंह भाटी नैं लखदाद कै वै आपरी मातृभासा राजस्थानी पेटै सकारात्मक निरणै लियो। इणरै सागै ई राज्य सरकार इण बरस अंतरराष्ट्रीय राजस्थानी साहित्य समारोह मनावणो ई तेवड़्यो अर इण पेटै बजट में दो करोड़ रुपियां रो प्रावधान राख्यो है।

अैड़ो लागै कै आपरी मातृभासा राजस्थानी रै पेटै अबै राजनेतावां रो उदासीन रवैयो खतम हुवतो जा रैयो है। लारलै दिनां मुख्यमंत्री अशोक गहलोत केंद्र सरकार नैं राजस्थानी भाषा री संवैधानिक मान्यता सारू पत्र ई लिख्यो है, जिणमें उणां हवालो दियो कै राजस्थान विधानसभा सूं बरस 2003 में राजस्थानी री संवैधानिक मान्यता सारू सर्वसम्मत संकल्प प्रस्ताव पारित कर'र केंद्र सरकार नैं भिजवायो हो, जिण माथै 16 बरसां पछै ई अजै निरणै क्यूं नीं लिरीज्यो है!

खैर, राजस्थानी नैं संवैधानिक मान्यता तो केंद्र सरकार नैं अेक दिन देवणी ई पड़सी, पण इणसूं पैली जका सकारात्मक कदम उठाईज रैया है, उणरी सरावणा तो होवणी ई चाईजै। राजस्थान रा उच्च शिक्षा मंत्री सूं औ भी आग्रह रैसी कै वै जिण भांत राजस्थानी भासा दिवस मनावण रो आदेस जारी करयो है, उणी तरै जे राजस्थान रा सगळा सरकारी महाविद्यालयां में आगलै सत्र सूं कला संकाय में राजस्थानी विसय खुलावै तो राजस्थान रा विद्यार्थियां सारू अेक लूंठो अर स्थाई काम हुवैला। राजस्थानी नैं शिक्षा सूं जोड़ण री आज महत्ती जरूरत है।

—श्याम महर्षि

ISSN : 2320-0995

शकुंतला पालीवाल

ढळतै सूरज रो उजास

पाछो दिन ऊग्यो अर मिनखां री जिनगी सुपर एक्सप्रेस रेल रा इंजन दांई दौड़वा लागी। आनंद-कुंज मांय आज रोज सूं घणी वत्ती हलचल व्है रैयी ही। तीन मिनखां रा छोटा-सा घर 'आनंद-कुंज' मांय प्रोफेसर माधवी आपरै बेटै आनंद अर बहू मंजरी सागै रैय री ही। आनंद अर मंजरी रो ब्यांव तीन महीनां पैल्यां प्रो. माधवी घणै हरख-उमाव सूं कीधो हो। आनंद घणै जोर सूं आपरी मां नै पुकार्‌यो, ''मां...''

आनंद इणरै आगै कीं कैवतो उणसूं पैलां ई माधवी उणरै साम्हीं ऊभी व्हैगी। पांच फुट सात इंच लंबी गोरी काया, माथा पे मोटी बिंदी अर सुनेरी फ्रेम रो चश्मो, सागै खादी री साड़ी ओढ्यां माधवी रै उणियारै पे आज महीना भर सूं जो चिंतावा री रेख ही, वै आज निजर कोनी आवै ही। उणरी ठौड़ आज माधवी रो उणियारो नूंवी उमंग अर उच्छाव सूं भर्‌यो निजर आयो।

आनंद नै अेक दाण तो आंख्यां पे विस्वास कोनी होयो। वो हक्को-बक्को-सो मां नै निहारण लाग्यो। मां उणरै सूटकेस सागै पूरी तरै सूं त्यार ऊभी ही। उणनैं देख'र आनंद नै फौज रा जवान याद आयग्या, जका घणी उमंग अर छाव सागै दुस्मणां सूं लड़ण खातर जाबा नै त्यार होवै। जाणै जंग जीत'र आवैला। आनंद इण विचारां में डूब्योड़ो हो, अतरेक में माधवी उणनै जगायो, ''बेटा, चाल। म्हैं रेडी व्हैगी। म्हैं नीचै चाल रैयी हूं, थूं बेगो आव!''

आनंद अेकटक आपरी मां नै जावतां देखतो रैयो। मां अतरी आसानी सूं रेडी व्है जावैला, वो इण बाबत सोच्यो ई नीं हो।

ठिकाणो :
448, शास्त्री सर्किल
भूपालपुरा
उदयपुर 313001
मो. 7877354547

 ISSN : 2320-0995

आनंद आपरी जोड़ायत मंजरी नैं बुला लीधी। मंजरी तो अेक मिनट री ई देर नीं करी, वा तो जाणै अेक पग माथै ऊभी ही। झट आयी अर दोनूं लोग-लुगाई नाळ रा पगोथिया उतरबा लाग्या। मंजरी आज घणी राजी ही अर व्है ई क्यूं नीं, आज वा आपरी सासू नै वृद्धाश्रम पूगावा जाय रैयी ही। ब्यांव सूं पैलां आनंद कदैई औ विचार नीं कीधो कै उणनैं कदैई आपरी मां नै वृद्धाश्रम छोडण री नौबत आवैला। कितरी दाण उण हियै मांय औ विचार आयो कै उण रा बापू कठै है? पण आनंद आपरै बापू रो उणियारो हाल तांई नीं देख पायो। मां उणनै उण रा बापू री तस्वीर तक कोनी बतायी। वो तो भलो व्है उणरी जोड़ायत मंजरी रो, जो काम आनंद तीस बरस मां रै सागै रैय'र नीं कर सक्यो, वो काम उणरी बहू तीन महीनां मांय कर दियो अर फैसलो सुणा दियो। सासू मां पे छींटाकशी पूरी कीधी। वा बोली, ''मां रो चाल-चलन ठीक नीं व्हैवा सूं व्है सकै उणनैं पापाजी छोड'र चल्या गया। म्हैं म्हारा कानां सूं आं तीन दिनां में घणी वातां सुणी है अर रूपेश अंगल सागै मां रो यूं हंस-हंस नै बातां करणी... मां कांई सोळा बरस री तो है नीं, म्हनैं तो लागै इणां सूं भी मां रो...'' वा इण सूं आगै कीं कैवती, उणरै पैलां ई आनंद रो उण पे हाथ उठग्यो। मंजरी री आंख्यां सूं आंसूड़ां री गंगा-जमना बैवण लागी। आनंद उणनैं मनावण लाग्यो, पण मंजरी अड़गी, ''इण घर में इब कै तो थांरी मां नै राखो अर कै म्हनैं!''

आनंद गैरै सोच-विचार में पड़ग्यो। आनंद कानां रो काचो मिनख हो, कै उण पे नवी बीनणी रो जादू? उणनैं मंजरी री अेकाअेक बातां साची लागण लागी। व्है सकै म्हारा बापू सुरगवासी व्हैग्या व्है तो ई उणां रो अेक चितराम कै उणां री जाणकारी तो मां देय ई सकती ही। म्हैं आज दिन तांई म्हारा बापू रो सकल उणियारो नीं देख्यो। आनंद मन में विचार करबा लाग्यो—अर ये रूपेश अंकल तो जाणै री परछाई दांई उणरै नजीक निजर आय जावता। हालांकै हाल तांई कदैई उणां रै किणी हाव-भाव सूं उणनैं कीं गलत मैसूस नीं व्हियो पण बीनणी रै कैयां पछै मन में बैम रा गोट उठण लागग्या।

रूपेश अंकल अर उणां री जोड़ायत साधना दोनूं आनंद री मां माधवी रा सगा-संबंधी सूं ई बध'र हा। अंकल अर आंटी दोनूं समाज सेवा करता। आनंद नैं कदैई उणनैं लेय'र गलत विचार नीं आया। पण आज मंजरी रा बोल रो ठा नीं कांई असर हुयो के तीस बरस जिण मां रै सागै बिताया, वो सगळो हेत, लाड-प्यार पांतरग्यो अर मंजरी री बातां री हां में हां मिलायां गयो।

जद उण औ फैसलो आपरी मां नै सुणायो तो मां कीं जबाब नीं दीधो। अेकदम चुप्पी साध ली। अर आज मां सूटकेस सागै त्यार व्है'र बेटा-बहू री वाट जोवती नीचै ऊभी ही। आनंद नैं मैसूस व्हियो कै मां नैं वृद्धाश्रम जावण री उतावळ है। जाणै कोई पंछी पींजरै सूं आजाद व्है अर उडणो चावै। माधवी हरखती-मुळकती कार मांय आपरो सामान आप ईज मेल'र पाछली सीट माथै जाय बैठी। ट्रैफिक नैं पार करतां आधै घंटा मांय उणरी मंजिल आयगी—'आपणो घर' (वृद्धाश्रम)।

माधवी आपरो सूटकेस लेय'र आगै कदम धर दीधा। पाछै-पाछै आनंद अर उणरी बीनणी मंजरी। फारम भरण री सगळी फारमेलिटी माधवी आप ईज झटपट निपटाय दी ही। माधवी रै औ वृद्धाश्रम कोई नूंवी ठौड़ नीं हो। माधवी टेम-टेम माथै वृद्धाश्रम मांय पैलां भी आवती रैवती ही। माधवी आपरो सामान नूंवा घर मांय लेय'र मांय बड़गी। आनंद अर मंजरी बंतळ करता दरवाजा तांई आय पूग्या हा।

इतरैक में देख्यो कै अेक गाडी गायर गेट पे ढबी। आनंद नैं पिछाणतां देर नीं लागी। रूपेश अंकल! ''ओ हो, अै तो अबै अठै ई आय पूग्या।'' मंजरी आनंद रै मूंडै साम्हीं भाळती बोली।

रूपेश अंकल अर साधना आंटी गाडी सूं सामान लेय'र नीचै उतरया। आनंद नैं देख'र बोल्या, ''अरे आनंद, थूं आज अठै कियां?''

आनंद उणां रै सवालां रौ जबाब दियो बिना बोल्या, ''औ ई तो म्हैं आपनै पूछणो चावूं कै आज आप अठै कियां?''

अंकल मुळकता थका बोल्या, ''आज थारी आंटी रो जलमदिन है अर म्हे हरेक जलमदिन यूं ईज मनावां, कदैई वृद्धाश्रम तो कदैई अनाथाश्रम जाय'र मिनखां नैं कपड़ा बांट'र उणां सागै दिन बितावां। इब थूं बता?''

आनंद कीं कैवतो उणसूं पैलां ई माधवी आपरी उमर री साथण्यां सागै हंसती-हरखती निगै आयगी। सूटकेस साइड में पड़्यो हो। रूपेश अंकल बोल्या, ''ओह, तो आ बात है। म्हैं भी सोचै हो कै आज कांई बात व्ही जो थे अठै आया।'' कैवतां-कैवतां अंकल रो उणियारो रीस सूं लाल व्हैगयो। वै कीं कैवता उणसूं पैलां ई मंजरी बोली, ''जकी जग्यां जिणरै लायक ही, वो वठै पूगग्यो, इणमें रीस मानण री कांई बात?''

साधना आंटी अतरी देर सूं सगळी बातां सुण रैयी ही। वा बोली, ''हां बेटी, थूं ठीक कैयो, उण बेचारी सागै और हुवणो ई कांई हो। अेक कुंवारी मां बणी अर ऊंचा आदर्सां पे चाल रैयी ही। थे लोग उणनैं ठीक ठिकाणै पूगाय दीधी।''

आनंद भौचक्को-सो साधना आंटी रो उणियारो निरखतो रैयग्यो। मंजरी बोली, ''इब देखल्यो, थे मां री असलियत।''

आनंद रो मूंडो फीको पड़ग्यो। वो कांई कैवतो, उण सूं पैलां ई रूपेश अंकल बोल्या, ''घणा सालां सूं आ बात छिप्योड़ी ही, आज म्हे भी थांनै सगळी कहाणी सुणा देस्यूं।''

वै सगळा पोर्च मांय पड़ी कुरसियां पे बैठग्या। रूपेश अंकल बतावण लाग्या :

''आ बात उण दिनां री है जद म्हे कॉलेज मांय पोस्ट ग्रेजुएशन करण खातर दाखिलो लीधो। नामी कॉलेज मांय अेडमिशन मिलण सूं जीव घणो राजी हो। म्हारा स्हैर

सूं कॉलेज दूर होवण री वजै सूं म्हे बॉयज हॉस्टल मांय रैवण लाग्यो। नूंवा कॉलेज रो पैलो दिन। पैला सेमेस्टर री पैली क्लाय म्हे कुल नौ ई जणा उपस्थित विहया। क्लास में म्हे चार छोरा अर पांच छोर्‍यां ही।

''पैलो लेक्चर बायो केमेसट्री रो हो। इज वाज वैरी इंटरेस्टिंग मांय फेवरेट सब्जेक्ट। पण इण सब सूं इंटरेस्टिंग वा ही, जो हर सवाल रो फटाफट उत्तर देय री ही। लंबी, दुबळी-पतळी काया अर निजर रा चश्मा मांय सूं झांकती उणरी बडी-बडी आंख्यां। उणसूं ज्यादा उणरी आंख्यां बंतळ करती निजर आयी। म्हैं उणनैं देखतो ईज रैयग्यो। अेक दाण तो लाग्यो, म्हैं बायोटेक्नोलॉजी रो स्टुडेंट हूं या पछै हिंदी री कविता बुणतो कोई कवि। म्हनैं म्हारै माथै ई हंसी छूटगी। माधवी नांव हो उणरो। वा ग्रेजुएशन ई उणीज कॉलेज सूं कीधी ही, बाकी म्हां सगळां रै वास्तै कॉलेज नूंवो हो। माधवी कॉलेज सूं ई हमेसा टॉपर रैयी ही। सगळां टीचरां री चहेती, पण घमंड रो नांव नीं। म्हां सगळा स्टुडेंट्स री वा हर बात सूं मदद करती। कदैई नोट्स तो कदैई असाइनमेंट कम्पलीट करवाय देंवती। उणनैं छोड'र सगळा हॉस्टलर हा। वा अेकली डेसकॉलर ही। यूं हंसता-खेलता भाई करता, लेबोरेट्री मांय अेक्सपेरीमेंट करतां दूजो सेमेस्टर आयग्यो। माधवी म्हनैं क्लासमेट सूं ज्यादा मैसूस होवा लागी। म्हारा दिन-दिमाग पे उणरो कब्जो कद हुयो, म्हनैं ई याद नीं। पण उण रा वैवार सूं कदैई म्हनैं कीं मैसूस नीं व्हियो। स्यात उणरी निजरां मांय सगळा नॉर्मल फ्रेंड हा। वा हमेस पैदल आवती-जावती। अेक दिन उणनैं अेकली जावती देख'र म्हैं उणनैं बाईक सूं छोडण रो कैयो। घणी खरी मान-मनोवल पाछै वा मानी अर पैली दाण उणनैं म्हारी बाईक पर बैठ'र घरां छोडवा चाल्यो। मन मांय हरख-उछाव न्यारो ईज हो।

''स्यात म्हारी जिंदगी री पैली लड़की, जिणनैं म्हैं पसंद कयं। आ बात और ईज ही कै उणनैं इण बात री कीं खबर कोनी ही, पण म्हैं घणो खुस हो। वा जठै बतायो म्हैं उणनैं उण ठौड़ ड्रोप कर दी। वा म्हनैं थेंक्यूं कैय'र आपरै घर मांय घुसगी। म्हैं उणनैं देखतो ई रैयग्यो। म्हनैं आ उम्मीद नीं ही। म्हैं तो विचार कर रैयो हो कै उणरै घरां उणरै हाथ री चाय कै कोफी पीस्यूं, थोड़ी ताळ बंतळ करसूं, पण इब कांई कियो जा सकै। म्हैं पाछो म्हारै हॉस्टल आयग्यो।

''यूं ईज टेम निकळतो गयो अर दूसरो सेमेस्टर ई चेतक घोड़ा दांइ सरपट व्हीर व्हैग्यो अर दूसरा सेमेस्टर रो आखरी पेपर ई निपटग्यो। उण दिन म्हैं मन मांय ठाण लीधो कै आज उणनैं म्हारा मन री बात कैय देवूं। म्हैं उणरी वाट जोवतो रैयो। वा आई अर म्हैं फुरती सूं म्हारी बाईक स्टार्ट कीधी अर उणनैं घरां छोडण सारू कियो। आज वा फौरन मानगी। घड़ी मांय सिंझ्या री साढी पांच बजी ही। म्हारो विचार हो, आज उणनैं कैफे कोफ-डे लेय'र जावूं अर केंडल लाईट मांय उणनैं उडीकतो म्हारैमन री बात बतावूं। यूं

विचारतां म्हैं कैयो, 'आज अेक बरस पूरो होवण वाळो है, आज अेक कोफी साथै पी लेवां? पछै तो अेक महीनै री छुट्टियां व्है जासी!' वा आपरी घड़ी मांय टेम देख्यो अर बोली, 'फेर कदैई, आज म्हैं आगै ई घणी लेट हुयगी हूं।' म्हनैं औ कदैई समझ में नीं आयो कै आ भागती आवै अर भागती जावै। म्हैं फेरूं हिम्मत कर'र बोल्यो, 'कांई नीं, आज थारै घरां थारा हाथां सूं बण्योड़ी चाय ई पी लेस्यां।' वा पडूत्तर मांय थोड़ी-सी मुळकी। म्हैं भी उणरै लारै-लारै उणरै घर मांय पूगग्यो।

''माधवी गेट खोल्यो। खोलतां ई म्हारी निजरां भौचक्कर रैयगी। आखो कमरो नेन्हा-नेन्हा टाबरां सूं भर्‌योड़ो हो। उणनैं देखतां ई वै चिरळाय पड़्या, 'मेडम आयग्या, मेडम आयग्या!' अर मेडम सूं आप-आपरी सिकायतां करणी चालू कर दीधी। माधवी फुरती सूं आपरो बेग साइड मांय राख्यो अर हाथ धोय'र म्हारै खातर अेक गिलास पाणी लायी। म्हैं हाल तांई उणरै कमरै री चौखट पे ऊभो हो। म्हैं ठग्यो-सो कदैई उणनैं तो कदैई नेन्हा-नेन्हा टाबरां नैं देखतो रैयो। स्यात उणरी आंख्यां तो ताड़गी ही अर वा बोली, 'म्हारा मम्मी पापा इण दुनिया मांय नीं है। म्हैं म्हारा तीन भाई-बैनां सागै इण घर मांय अेक कमरो, किचन किरायै लेय'र रैवूं। म्हारी जिम्मेवारी नेन्हा भाई-बैनां री परवरिस अर कॉलेज री फीस अर किरायै-भाड़ै री पूरती सारू आं नेन्हा-नेन्हा टाबरां नैं पढावूं हूं। आपणै कॉलेज री छुट्टी पांच बजी व्है अर सवा पांच बजी म्हैं घरां पूगूं। इण वास्तै टाबरां रै ट्यूशन रो टेम सवा पांच रो है, पण आज म्हनैं देर व्हैगी।' वा आ सगळी बात बता रैयी ही अर म्हैं उणरो मूंडो जोवै हो। आज प्यार सूं ज्यादा उणरी इज्जत अर सम्मान बधग्यो हो म्हारी निजरां मांय।

''म्हैं गेला मांय विचारतो आयो कै आ किण घड़त री छोरी है। क्लास मांय टॉपर, टीचर्स री चहेती, नेन्हा भाई-बैनां री मायत अर नेन्हा टाबरां री मेडम। उणरै साम्हीं जद म्हैं अपणै आपनैं ऊभो कर्‌यो तो लाग्यो कै वा आपरी हाईट सूं केई गुणा वत्ती ऊंची है अर म्हैं उणरै साम्हीं बावनियो। मां-बाप रो लाडलो, उणां रा ई रुपियां-टक्कां सूं पिक्चर देखूं, सिनेमा जावूं, पार्टियां करूं, घूमा-फिरो करूं अर लाइफ एन्जॉय कर रियो हूं इण नूंवै स्हैर मांय। औ विचारतो म्हैं भी म्हारे घरां जावण सारू पैकिंग कीधी अर ट्रेन मांय बैठग्यो।

''अेक महीनो तो पलक झपटकतां निकळग्यो, माधवी नैं म्हैं अेक दिन ई नीं भूल सक्यो। म्हनैं अेक जोड़ी मोत्यां-सी आंख्यां नैं देखण री भारी उतावळ ही। आज दूसरा साल रै पैलै सेमेस्टर रो पैलो दिन हो। म्हैं बेगो कॉलेज पूगग्यो। म्हनैं खबर ही कै माधवी हमेस क्लास मांय टेम सूं पैलां आवै, पण आज माधवी रो कठैई अतो-पतो नीं हो। क्लास चालू व्ही, टीचर अेनाउंस कीधो कीधो कै जिण स्टुडेंट रै 6.5 सीजीपीए सूं कम बण्या, उणां नैं कॉलेज सूं निकाळ दिया है। माधवी नैं अेबसेंट देख'र विचार आयो, कठैई माधवी

रै सीजीपीए कम तो नीं बण्या, पण माधवी तो क्लास टॉप कीधी ही। म्हैं घणो खुस व्हियो हो, जाणै म्हैं ईज क्लास टॉप कीधी व्है। आगला तीन-चार दिन फेर ऊग्या अर आथम्या पण माधवी रो कठेई पतो नीं लाग्यो।

''अेक दिन वा अचाणचक क्लास मांय आयगी। उणरी सूज्योड़ी अर थाक्योड़ी आंख्यां। हमेस मुळकती मूरत कठैई गमगी ही अर उणरी जग्यां अपणै आप मांय खोयोड़ी माधवी बैठी ही क्लास मांय। टीचर दो दाण टोक चुक्या पण उण कीं जबाब दियां बिना निजर नीची कर लीधी। ...इब तो रोज रो औ हाल हो। म्हे सगळा क्लासमेट अचूंभै में हा। अेक दिन जद म्हे क्रोपमॉलफोलॉजिकल करेक्टर ऑबजर्वेशन करण खातर फील्ड मांय गया, उण दिन म्हे सगळा माधवी पे हमलो कर दीधो। म्हे सगळा उणसूं नाराज हा। सगळी बातां उणनैं सुणायी। वा देर तांई सुणती रैयी, फेर बोली, 'थांनै म्हारी जिनगाणी रै बारै में कीं पतो कोनी, म्हारी जिनगाणी बदळ चुकी है पूरी तरै सूं। म्हारी जिनगाणी इब आनंद है।'

''म्हे सगळा साथी फाटी आंख्यां सूं उणरो उणियारो उडीकता रैयग्या अर म्हैं तो अणूतो छीजग्यो। मन मांय विचार आयो—देख्यो नतीजो? टेमसर प्रपोज करणो कित्तो जरूरी होवै। स्यात वा हां कर देंवती म्हनै। अबै औ विलयन आनंद म्हारी लव स्टोरी मांय कठै सूं आयग्यो। म्हैं कांई कैवतो, इब कांई नीं बच्यो, उणनैं कैवण सारू। उणरी सहेल्यां बोली, 'वाऊ कॉन्ग्रेचुलेशन्स। कद है थारो ब्यांव?' अर इणरै आगै म्हे उणरै मूंडै सूं जको कीं सुण्यो वीं पछै तो म्हां सगळां री आंख्यां सूं आंसूड़ां री झड़ी लागगी।

''माधवी कैवण लागी, 'कॉलेज री छुट्टी रै आगलै दिन सिंझ्या री टेम म्हैं घरै जाय रैयी ही। कार सूं अेक आदमी ट्रेवलिंग बेग गळी रा कॉर्नर पर मेल'र व्हीर व्हैग्यो। उण समै म्हैं अेकली ऊभी ही। डरपतां-डरपतां म्हैं बेग खोल्यो तो देखती ई रैयगी, जींवतो-जागतो नेन्हो-सो बालक। म्हैं तुरंत उणनैं हास्पीटल लेय'र पूगी। डाक्टर बोल्या कै इण बालक रै बचवा री उम्मीद कम है। पण म्हैं हार नीं मानी। दिन-रात अेक कर दी उण खातर। भगवान री दया सूं अब आनंद ठीक है।' म्हे सगळा उणनैं देखता ई रैयग्या।

''उण दिन बाद म्हे उणरी संभव व्हैती मदद करता अर वो दिन ई आयग्यो जद पोस्ट ग्रेजुएशन कम्पलीट व्हैगी। म्हैं उणनैं समझायी कै रिसर्च रो फोरम भर दे, साथै पीअेच.डी. अर स्कॉलरशिप रै सागै इंडिया रा टॉप साइंटिस्ट सागै काम करण रो मौको है, पण उणरै कानां तो जूं ई नीं रैंगी। साफ बोली, 'म्हैं तो म्हारै आनंद नैं छोड'र कठैई नीं जावणी चावूं।' इण बात पे सविता बोली, 'जद थारो ब्यांव होवैला तो थूं कांई करसी? आनंद नैं सागै सासरै लेय'र जासी कांई?' आ बात सुण'र माधवी बोली, 'म्हैं ब्यांव नीं करूं, भाई-बैनां रो ब्यांव करणो अर आनंद री जिनगाणी बणावणी, अै दो ईज म्हारा सुपना है। जे कोई म्हारै सूं ब्यांव करणो चावै तो उणनैं आनंद नै सागै अपणावणो पड़सी।'

''म्हैं माधवी रो उणियारो जोवतो रैयग्यो। म्हारै मांय हाल तांई इतरी हिम्मत कोनी ही कै म्हैं अेक बच्चै सागै उणनैं पत्नी रूप मांय स्वीकार करूं। जमानो, समाज अर म्हारा सगळा घरवाळा कांई कैसी ? म्हैं उण सगळां रो मुकाबलो कोनी कर सकूं। औ सोच'र म्हैं म्हारै अेकतरफा प्यार रो मर्डर कर दीधो। साधना अर म्हैं सेम कॉलेज मांय असिस्टेंट प्रोफेसर रा पद माथै ज्वाइनिंग कीधी अर सेम कास्ट सेम प्रोफेशन री वजै सूं म्हारो ब्यांव व्हैग्यो। उणरै पछै म्हे म्हांरी गिरस्थी मांय रमग्या।

''अेक सेमिनार मांय जद माधवी सूं मेल-मुलाकात व्ही तो उणरी सूनी मांग देख'र समझग्या कै आ धुन री पक्की निकळी। आनंद रै कारण ई ब्यांव नीं करयो। इणरै पछै म्हां दोनूं री पोस्टिंग इण स्हैर रा कॉलेज मांय व्हैगी अर उणरै आगै री सगळी बातां तो थे दोनूं जाणो ईज हो। माधवी रो इण स्हैर मांय उणरो बेटो आनंद अर थोड़ा भोत मिनख है। धन्य है वा माई, जिणरी कोख सूं माधवी सरीखी मणी उपजी। पण माधवी मूरख ई रैयी। जकी मरतै टाबर नै जिवायो अर जात-पात अर धरम री जाणकारी बिना आपरा खून सूं सींच'र उणनैं इतरो मोट्यार करयो, वो ईज आनंद उणनैं वृद्धाश्रम लाय पटकी।''

इतरी बात सुणतां ई आनंद अर मंजरी री आंख्यां नीची नमगी। रोय-रोय'र आनंद रै हिचक्यां बंधगी। वो दौड़'र मां रै पगां मांय जाय पड़्यो, ''मां, म्हनैं माफ कर दै।''

अचाणचक औ नजारो देख'र माधवी नैं माजरो कीं समझ में नीं आयो। उणरी निजर रूपेश अर साधना पे पड़ी तो सगळो माजरो समझगी। उण आनंद नैं उठायो अर बोली, ''बेटा, म्हनैं थारै सूं कांई सिकायत नीं है। कास, थूं म्हारै पे विस्वास करतो, थनैं तीस साल अर तीन महीनां रो आंतरो समझ नीं आयो। इब थूं अर थारी बीनणी आराम सूं जिनगाणी बितावो, सदा खुश रैवो! म्हैं वो घर थांरै नांव कर दियो है। म्हारो अेक सुपनो हो कै म्हैं अनाथ बालकां अर बूढा मिनखां खातर कीं करूं, इब म्हे सगळा काम करण खातर सुतंतर हूं। धुन री पक्की, पैल्यां ई ही अर आज ई हूं।'' यूं कैवती माधवी पूरा आतमविस्वास अर नूंवी उमंग अर नूंवै उछाव सागै कदम आगै बधाया।

ढळतै सूरज रो उजास आज निराळो ईज हो।

❖❖

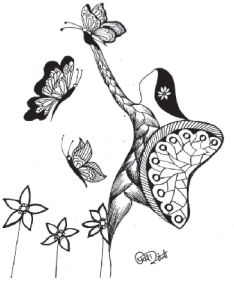

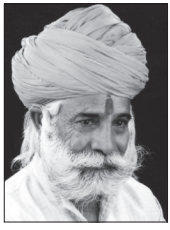

देवकिशन राजपुरोहित

गिरस्थी रो जंजाळ

जावतो सियाळो अर आवतो उन्हाळो। नूंवी ठंड अर नूंवी गरमी। मार्च रो महीनो। घणा ई ब्यांव मंडियोड़ा। इणी वेळा अेक आरएएस अफसर नवीन रो ई ब्यांव हो। नवीन एसडीओ लाग्योड़ो हो।

ब्यांव जिकी लड़की सागै हुवणो हो बा डाक्टरी री पढाई करै ही। सगाई सूं पैली नवीन कै दीनो हो कै वो नीं टीको लेवै अर ना ई दत्त दायजो ई लेवै। आ बात उण रा घरआळा तो मान ली ही अर बेटी आळा तो राजी खुसी मान ली। सस्तै भाड़ै पोकर जी कुण कोनी जावणो चावै। पछै आरएएस मिलै कठै है। जिका चपरासी लाग्योड़ा है बै ई लाखां रो टीको मांगै जद कै ना रूप-रंग अर ना ई लाव-लखण, भंवियोड़ी टांगा आळा। अठै तो गुणां री खान, फूठरो-फर्रो टाबर। हाडा-गोडां अर सांतरो खानदान।

लाडां-कोडां ब्यांव मंडग्यो। जात अर समाज रा टणकैल मिनख मांड में अर जांन में आया। मोटा-मोटा अफसर आया। जांन चढी। बींद सिणगारियां पछै राजकंवर जिसो लखावै हो।

अेक सिणगारयोड़ी घोड़ी। ऊपर राजकंवर जिसो बींद। आगै-आगै बैंडबाजो अर लारै सगळा जांनी मारवाड़ी। भांत-भांतीली पौसाक में, हंसी-ठठा मसखरी करता चालै हा। बैंड माथै मांड गाईजै ही—केसरिया बालम आवो नीं पधारो म्हारे देस...

मांडो आयगो। मांडा आळा सत्कार करण में लागग्या। इसो ब्यांव लोग पैली वेळा दीठो जिणमें ना तो दारू अर ना ई और कीं नसो-पतो हो जदकै इसा ब्यांव में बोतलां ई बोतलां आवती

ठिकाणो :
5 ई 339
जयनारायण व्यास नगर
बीकानेर 334003
मो. 7976262808

ही। घणकरा लोग तो बोतलां थैला में घालनै ले जावता हा। अठै तो खाली बोतल ई देखण नै नीं मिलै। मारवाड़ रा मिनख अमलदार ई घणा। पण अठै तो अमल रो नांव निसाण ई कोनी हो। लोग ब्यांव में डळा आपरा गुंजा में भर-भरनै ले जावै पण अठै तो काळिया रा दरसण ई नीं हुया।

अेक जांनी कैवै हो, ''आछी जांन आया। जांन है कै रामस्नेहियां री कोई जात्रा है। घणा ई तो पिछतावे हा।

बींद तोरण माथै गयो। जांनी लारै सामेळा में बैठा हा। लुगायां जांनिया नैं गाळ्यां गावै ही :

सात सुपारी लाडा, सिघोड़ां रो सटको।
बूढा-ठाडा जांनी ल्याया, काई खायो गटको।
काणा-खोड़ा जांनी ल्याया, कांई खायो गटको।

तोरण माथै भळै बीजो ई गीत गाईजे हो :

बनसा बेगा-सा बुलाया
थे मोड़ा किस विध आया?
बनी अे थोथोड़ी थळियां में
म्हारा रेंवत घुड़ला थाक्या।

बींद-बीनणी रो हथळेवो जुड़्यो। फेरा हुया अर पछै दोनुवां नैं साम्हीं मोटा सोफा माथै बैठाया। बीनणी रै घूंघटो कोनी हो। ओढणो माथा माथै हो। बीनणी रो उणियारो दिप-दिप करै हो। बीनणी डाक्टरी री पढाई करै है। साच्याणी बीनणी इंदर री अपछरा जिसी लागै ही। नाव हो—हैपी।

बूढिया हेंप करै हा। औ कांई खिलको है? अजै तो बींद री मां ई अेक हाथ लंबो घूंघटो राखै। देखणिया देखै हा। जांनिया में न्यारी-न्यारी कानाफूसी चाले ही।

बीत्योड़ै जमानै अर बदळतै जमानै री बातां चालै ही। मधरा-मधरा मारवाड़ी गीत गाईजै हा। लोग बींद-बीनणी साथै फोटुवां खिंचावै हा।

अेकै कानी लेवो अर खावो आळो जीमण लाग्योड़ो हो। केई कैवै हा, ''औ तो डोफा डिनर है। अेक प्लेट में ई सगळो लेवणो हो। दाळ, दहीबड़ा, मिठाई, पूड़ी, साग सगळा सेळभेळ हुयग्या। ज्यूं खायीज्यो त्यूं खाय'र पेटभराई करी। स्हैरां रा ब्यांव ईसा ई हुवै है। जानी सीख करी। बींद-बीनणी नैं ई सीख दिरीजी। कोयलड़ी गाईजी, मोरियो गाईज्यो। जद अै गीत गाईजता जद बीनणी रोवा-रींको करती ही, पण आ तो लाडां-कोडां हंसती-हंसती कार में बैठगी। गीत तो रीत रो रायतो हो। जूनी लुगायां हेंप करै ही। जांन परणीज'र पाछी बनड़ै रै अठै गई परी।

बींद–बीनणी परणीज'र आया। मारवाड़ी रीत मुजब वंदाय'र घर मांय लिया। जातां लागी। गांव में हांती बांटीजी। लुगायां आवै। बीनणी नैं निरखै। थूथकी न्हाखै। बीनणी घणी ई रूपाळी ही। अेक नब्बै साल रा माजीसा आया। बीनणी नैं देखी अर मूंडो मचकोड़'र निकळण लागा। बीनणी री सासू देख लीनो। बा समझगी कै डोकरी नैं बीनणी में कीं–न–कीं खामी दिखी है। बा डोकरी नै बैठा'र पाणी पायो। चाय लायी अर बोली, ''बूझीसा, बीनणी दाय कोनी आई कांई?''

डोकरी बोली, ''बीनणी तो घणी ई सरूप है, दाय आई म्हनैं तो...।''

पण बीनणी री सासू आपरी सौगन दिराय'र बूझ्यो, ''थे मूंडो मचकोड़्यो हो इण वास्तै कीं–न–कीं बात तो है। म्है समझगी। थांनै बताणो पड़सी। थे सेंसर देख्यो है। थांनै म्हारी सौगन है, है जकी बात बताणी पड़सी।''

डोकरी बोली, ''थे बीनणी री आंख्यां देखी।''

बा बोली, ''नई तो...''

डोकरी बोली, ''बीनणी री आंख्यां कायरी है, जिणनैं आपणै अठै माजरी कैवै अर कथाणो है कै अेक मंजर अर सौ कंजर। थे बुरो ना मान्या। आ बीनणी थांनै न्याल कोनी करै।''

डोकरी तो कैय'र निकळगी, पण बीनणी री सासू रै सीत बापरगी।

नवीन री छुट्टियां खतम हुयगी। बीनणी नैं ई कॉलेज जावणो हो। छेकड़ अेक दिन दोन्यूं सीख करी। दोनुवां रै अेक पखवाड़ै में खूब हेत हुया, पण जावणो तो होई।

आछी घड़ी–पुळ में निकळ'र आप आपरी गाडी पकड़ी। हैपी बीकानेर अर नवीन उदयपुर गियो परो। अेक परदेस सूं दिखणादो तो बीजो उतरादो गियो।

दिन पंदरैक तो हैपी सूं मोबाइल माथै बंतळ हुवती रैयी अर पछै फोन बंद। बठीनै बोट आयग्या। अेसडीओ नवीन पजग्यो बोटां में। जीव तो हैपी कनै हो, पण नौकरी तो नौकरी ई हुवै है। इणी सारू दाना मिनख नौकरी री निंदा करी ही :

नौकरी न कीजिये, घास खोद खाइए।
और खोदे आस–पास, आप दूर जाइये।

पण नवीन तो लूंठो अफसर हो। जिम्मेवारी ई तो ही।

अेक दिन उणरै ठिकाणै अेक कागद मेडिकल कॉलेज सूं हैपी रै नांव आयो, जिणमें लिख्यो कै च्यार महीनां सूं बा गैर हाजर है। बेगी कॉलेज पूगै। बो कागद देख'र उणरो बाको फाटग्यो। बा कॉलेज में कोनी जणै कठै गई। आपरै सासरै फोन कर्‌यो तो सासरिया बोल्या, ''म्हांनै कीं बैरो कोनी।''

अबै राज रा काम सूं हाथूंहाथ जयपुर जाणो। अबै करै तो करै कांई!

जयपुर गियो। आपरा अेक साथी रै अठै रुक्यो। साथी पुलिस में डिप्टी हो। रात रा बो आपरी बात करी।

डिप्टी बोल्यो, ''हैप्पी थारी लुगाई है कांई ?''

बो बोल्यो, ''थूं जाणै है कांई ?''

डिप्टी बोल्यो, ''हैपी रो तो तीन महीनां पैली म्हारी घराली अबॉर्शन करयो हो। बा अठै जयपुर में ई किणी रै साथै रैवै है। डाक्टरी री पढाई बीकानेर करती ही। पढाई तो बा छोड छिटकायी।

डिप्टी साब री घरआळी डाक्टर, सगळी बात जाणती ही। बा खुलासो करयो कै हैपी रो ब्यांव हुवणो हो, उणसूं पैली ई बा अेक पक्को भायलो बणा राख्यो हो। ब्यांव री वेळा बा भारी पगां ही। भायलो पढाई छोड'र आपरै बाप रो ठेकेदारी रो धंधो चलू कर दियो। हैपी नैं ई ब्यांव पछै बीकानेर सूं बुलाय लीनी। टाबर पाछो नखाय दियो। घरै नौकर-चाकर है। भायलो उणनैं कैय दियो कै ब्यांव थासूं ई करसूं। अबै पैली आळा धणी माथै दायजै रो मामलो दरज करासी अर उणसूं कीं ले-लिवाय'र राजीपो कर तलाक लेय लेसी।

बात सुण'र नवीन रो काळजो हिलगो। बो तुरत-फुरत गांव आयो। बापूजी सूं मिल्यो। सगळी विगत मांड'र बताई। पंच पंचायती व्ही।

छेकड़ अेक दिन बेटी रो बाप कचैड़ी चढ'र दहेज रो मामलो लिखाय दियो। तफ्तीश हुई। मामलो फरजी निकळ्यो। अेफआर लागगी।

अबै नवीन तलाक री कोशिश करी, तो हैपी रुपिया पचास लाख मांग्या। भला मिनख बिच्चै पड़'र 25 लाख में दोनूं री रजामंदी सूं अदालत मांय तलाक ले लीनो। रुपिया तो हैपी सूं हैपी रो भायलो ले लीना। नवीन री लार छूटगी।

लारलै दिना विनय नैं कोई बतायो कै हैपी रो भायलो हैपी नैं घर सूं काढ दी अर गाजां-बाजां सूं ब्याव कर लीनो। हैपी रो घरबार छूटग्यो। रुपिया ई लेखै लागग्या। हाथ ई बळग्या अर होळा ई ढुळग्या।

हैपी डाक्टर तो बणी कोनी पण तलाकसुदा कोटा सूं बाबू लागगी। नवीन रै दफ्तर में बाबू री खाली ठौड़ माथै हैपी नैं लगाय दीनी। बा आपरा भायला माथै अेक मामलो लिखायो हो कै बो ब्यांव रो झांसो देय'र उणरी च्यार साल इज्जत लूटी, पण ठेकेदार रुपिया-पईसा बाळ'र मामलो लम्बाण में नखाय दीनो।

नवीन उणनैं आपरै दफ्तर में देखी अर लंबी छूटी माथै गियो परो। पाछो आयो तो बदळी कराय'र चार्ज देवण नै ई आयो हो। जद उणरी विदाई हुवै ही तो हैपी रोय पड़ी अर बोली, ''म्हनैं माफ करद्यो।'' बा सगळा सागै माळा नवीन नैं पैरावणी चावती। माळा लेय'र साम्हीं आयी तो नवीन लारै सिरकग्यो। अबकाळै बा अरड़ाय'र बोली, ''म्हारी धूड़ खाणी हुयगी।'' पण नवीन उणरै साम्हीं ई नीं भाळ्यो अर आपरी कार में बैठग्यो। कार व्हीर हुयगी। लारै कार सूं धूड़ उडै ही अर हैपी रोवै ही।

❖❖

अनूदित कहाणी

उल्थाकार :
डॉ. मनमोहन लटियाल

चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'

सुखमय जीवण

परीक्षा देवण रै लारै अर परिणाम निकळ्यां सूं पैली रा दिन कियां अडीक रै मांय निकळै, आ बै ई मैसूस कर सकै जिका अै दिन आंगळ्यां पर गिणता रैवै। ना जागतां सुख अर ना सोवतां थकां सुख। म्हारो भी कीं इसो ई हाल लागतो दीसै हो। अेलअेल.बी. रो परिणाम अबकै घणो मोड़ो निकळतो दीसै हो, न जाणै कांई होयो। सोच्यो घर सूं बारै निकळां; बारै कीं जीवड़ो लागसी। लोह रै घोड़ियै (बाइसाइकिल) रा कान पकड़्या अर चाल पड़्या। कोई तीन-च्यार मील चालणै सूं कीं चैन बापर्‌यो। हर्‌या-भर्‌या खेतां रो खुलो बायरो, कठैई देवदार रा पत्तां री सौंधी महक अर कठै-कठैई हवा रो सुंसावणो, सगळा रळ'र म्हारै हियै में बैठ्यै परीक्षा रै भूत नैं भगा नाख्यो । बाईसाइकिल भी जबरी चीज है। ना दाणा मांगै अर ना पाणी। चलायां जाओ जित्तै तांई टांग्यां जबाब नीं देवै। ...सोच्यौ कै म्हारै घर सितारपुर सूं लगैटगै पंदरै मील काळानगर है—बठै री मळाई री बरफ जग चावी है अर बठै ही म्हारो अेक भायलो रैवै है, पण बो कीं थोड़ो बेमीलो है। ...चालो आज बीं सूं ई सिर खाली करस्यां।

फिस्स! अचाणचक अरस सूं फरस पर पड़ता दीस्या। बाइसाइकिल री हवा निकळगी। ...पंप साथै कोनी हो अर नीची देख्यो तो ठाह पड़्यो कै गांव रै टाबरां सड़क माथै कांटां री बाड़ लगाई है। बांनै भी दो गाळ्यां काढी, गाळ्यां सूं पिंचर तो निकळतो दीस्यो कोनी। ...कनै मील रै भाटै माथै निजर पड़ी, काळानगर अठै सूं सात मील अळगो पड़ै। दूजै भाटै रै आवतां आवतां म्हारो दम निकळण लाग्यो ...

ठिकाणो :
अे 159, गळी नं 25
भरत विहार रोड
उत्तम नगर
नई दिल्ली 110059
मो. 9999206695

2

''बाबूजी, बाईसाइकिल में पिंचर हुयग्यो कांई?''

अेक तो चस्मो, बीं पर रेत री चादर जम्योड़ी, बीं पर माथै सूं टपूकड़ा जियां पड़ती पसीनै री बूंद, गरमी री चिढ अर काळी रात-सी नागण जिसी सड़क—म्हैं आ देख कोनी सक्यो कै दोनां पासै कांई है। अै सबद कान सूं सुणतां ई सिर उठायो, तो देख्यो अेक सोळै-सतरै बरसां री छोरी सड़क रै किनारै ऊभी ही।

''हां, हवा निकळगी है, अर पिंचर भी हुयगी। पंप म्हारै कनै है कोनी। काळानगर घणो अळगो भी कोनी—थोड़ी देर सूं पूग जावूंला।'' अंत रो वाक्य म्हैं अकड़ दिखावण सारू कैयो हो। मांयनै सूं म्हारो हियो जाणै हो—पांच मील, पांच सौ मील जिसा दिसै हा।

''इसी हालत में तो थै काळानगर कांई कळकत्तै पूग जावोला बेगा ई। थोड़ा मांय चालो, थोड़ो ठंडो पाणी पीवौ। थांरी जीभ सूख'र ताळवै सूं चिपगी होसी। काकोसा री बाईसाइकिल रै मांय पंप है अर म्हारो नौकर गोमदो पिंचर काढणो भी जाणै है।''

''ना, ना।''

''ना-ना कांई, हां-हां!''

इत्तो कैय'र छोरी म्हारै हाथां सूं बाईसाइकिल रो हेंडल खोस लियो अर सड़क रै अेक पासै होंवती दीसी। म्हैं ई बीं रै लारै-लारै चाल्यो। देख्यो—अेक कांटां री बाड़ रै बिचाळै बगीचो है, बीं रै मांय अेक बंगलो है। अठै ईज कोई 'काकोसा' रैवता होसी, पण आ कांई छोरी!

म्हैं चस्मो रूमाल सूं साफ कर्‌यो अर बीं रो मूंडो देख्यो। पारसी चाल री अेक गुलाबी साड़ी रै हेठै चीकणा काळा केशां सूं ढक्योड़ो मूंडो पळपळाट करै हो अर बीं री आंख्यां म्हारै कानी थोड़ी दया, थोड़ी हंसी अर अचम्भै सूं देखै ही। बस, पढेसरी! इसी आंख्यां म्हैं पैली कदैई नीं देखी ही। इयां लागै हो जियां बा म्हारै काळजै नै निचोड़ अर पीयगी हुवै । ...कदैई अेक तीर सूं मरतो सुण्यो है?

''थे सीतापुर सूं आया हो? थांरो नांव?''

''म्हैं जयदेवशरण वर्मा हूं। थारा काकोजी... ?''

''ओऽ होऽऽ, बाबू जयदेवशरण वर्मा, बी.अे., जका 'सुखमय जीवण' लिख्यो है! म्हैं बडभागी हां कै आपरा दरसण हुया! म्हैं थांरी किताब पढी है अर काकोजी तो थांरी परसंसा कर्‌यां बिना अेक दिन कोनी जावण देवै। बै आपसूं भेंटा कर राजी होवैला...।''

लुगाई रै साम्हीं बीं रै पीहर री बडाई कर देवै अर लेखक रै साम्हीं बीं रै ग्रंथ री, तो औ सनेव अर प्रेम हथियावण रो अचूक मंतर है। जिकै साल म्हैं बी.अे. पास करी, बीं साल केई दिन लिखणै रो भूत सवार हुयो। लॉ कॉलेज रै फर्स्ट इयर में सेक्सन अर कोड

री कीं परवा न कर अेक 'सुखमय जीवण' नांव री पोथी लिख चूक्यो। आलोचकां हाथ मारण में कोई कसर कोनी छोडी अर पूरै बरस में सतरह पोथी बिकी। आज म्हारी कीं कदर हुयी, कोई सरावण वाळो मिल्यो तो सही। इत्ती बातां करतां म्हे बरींडै में पूग्या, जठै कनटोप पैरयां, पंजाबी ढंग री दाढी राख्यां अेक अधेड़ मिनख कुरसी माथै बैठ्या किताब पढै हा। छोरी बोली, ''काकाजी, आज आपरा बाबू जयदेवशरण बी.अे. नै साथै लाई हूं। बो मिनख बेगो-सो चस्मो उतारयो अर दोनूं हाथ बधावतां मिलण सारू पगल्या मेल्या।

''कमला, थोड़ी तेरी मां नै बुलाय ला। आओ बाबू, आओ। म्हांनै थांरै सूं मिलण रो चोखो चाव हो। म्हैं गुलाबराय वर्मा हूं। पैल्यां कमसेरियट रै मांय प्रधान बाबू हो। अबार पेंसन लेय'र इण सूनी रिंधरोही मांय रैवूं हूं। दो गायां राखूं हूं अर कमला अर बीं रै भाई प्रबोध रै पढाई-लिखाई रो प्रबंध करूं हूं। म्हैं ब्रम्हसमाजी हूं; म्हारै अठै परदो कोनी है। कमला हिंदी मिडिल पास करयो है...।'' इत्ती पिछाण कराय'र बाबूजी थोड़ो सांस लियो। म्हनैं औ ज्ञान हुयो कै कमला रा बाबूजी म्हारी जात रा ई है।

''आपरो ग्रंथ बडो अपूरब है। धणी-लुगाई री जिंदगाणी रो सुख चावण वाळा लोगां खातर अणमोल है।''

म्हैं सोच्यौ हिंदी रा पत्र संपादकां रै मांय ओ बूढियो क्यूं कोनी होयो? जे औ संपादक हुवतो तो आज म्हारी ओळखाण हुंवती।

''थांनै गिरस्थ जीवण रो कित्तो अनुभव है! थे तो सगळी बातां जाणो हो! अती जाणकारी अर अणमोल बात कदैई किताबां में मिल्या करै! कमला री मां कैवती ही कै थे कोरा किताबां रा कीड़ा हो। सुणी-सुणई बातां लिखो हो। म्हैं रोजीना कैया करतो कै इण किताब रै लिखारै नैं परिवार रो पूरो अनुभव है। धिन है थांरी जोड़ायत नैं! थांरो अर जोड़ायत रो जीवण कित्तौ सौरो-सुखी गुजरतो हुसी! अर जिण टाबरां रा थे बाप हो, बै कित्ता बडभागी है कै हमेस आपरी छियां रै मांय रैवै है।''

...म्हारै मन में आई कै कैय दूं अजै म्हनैं पचीसवों बरस चाल रैयो है, कठै रो अनुभव अर कठै रो परिवार? फेर सोच्यो, इयां कैवणै सूं म्हैं इण बूढियै री निजरां में हेठो उतर जावूंला...।

3

उण बडेरै आदमी बीं दिन म्हनैं जावण कोनी दियो। कमला री मां घणै सनेव सूं जीमण जिमायो अर कमला गजब रो पान जिमायो। न तो म्हनैं काळानगर री मळाई री बरफ याद आई अर न ही म्हारै सनकी भयलै री। काकोसा री बातां में सित्तर फीसदी तो म्हारी पोथी अर रामबाण लाभां री परसंसा ही, जिणनैं सुणतां-सुणतां म्हारा कान सुंसाट मारण लागग्या हा। पचीस फीसदी म्हारी परसंसा अर म्हारै पति जीवण अर बाप रै जीवण री महिमा गावै हा। काम री बात तो फगत छबीसवों भाग ही, जिणसूं ठाह पड़्यो कै अजै

कमला कंवारी है, बीं नैं आपरी फूलां री क्यारी संभाळण रो खासो कोड है, 'सखी' रै नांव सूं 'महिला-मनोहर' मासिक पत्र रै मांय लेख भी देवंती रैवै है।

सिंझ्या पौर नै म्हैं बगीचै मांय घूमण नै निकळ्यो। म्हैं देख्यो अेक खुणै रै मांय केळै री झाड़्यां रै नीचै मोतीया अर रजनीगंधा री क्यारी है अर कमला बांनै पाणी देय रैयी है। म्हैं सोच्यो—औ ठीक टेम है। आज मरणो है या जीवणो है। बीं नै देखतां ई म्हारै काळजै मांय सनेव रो दिवलो पळपळाट करण लाग्यो हो अर आखै दिन बठै रुकणै सूं बीं री लौ और धधकण लागी ही। ...बेसमझी कैवो, ढीठपण कैवो, पागलपण कैवो, म्हैं भाज'र कमला रो हाथ पकड़ लियो। कमला रै चेहरै माथे सुरखी दौड़ती दीसण लागी अर हाथ रो डोलियो जमीन पर आ पड़्यो। म्हैं बीं रै कान में कैवण लाग्यो, ''थारै सूं अेक बात कैवणी है।''

''कांई? अठै कैवण वाळी कुणसी बात है?''

''जद सूं आपनैं देख्या है तद सूं ई...''

''घणा ई बोल लिया अबै चुप करो! इसा कु-लखण!''

अबै म्हारै वचनां रो समदर हिलोरा मारण लाग्यो। म्हैं खुद कोनी जाणै हो कै म्हैं कांई कैवण लाग रैयो हूं, पण लाग्यो बकण नै... ''प्यारी कमला, थे म्हारा प्राणां सूं घणा प्यारा हो; ...म्हांनै हिवड़े रा भंवरा बणण दो। म्हारो जीवण थांरै बिनां कोरो मरुथळ है, उणमें गंगा बण प्रवाहित होवती रैवो। जद सूं थांनै देख्या है, म्हारो मन म्हारै अधीन कोनी रैयो। म्हैं जद तांई सांति कोनी पाऊं जद तक थे...।

कमला जोर सूं किल्ली मारी अर बोली, ''थांनै इसी बातां करतां लाज कोनी आवै? दिरकार है थांरी शिक्षा अर स्हैरी पढाई नैं! इणी नैं सभ्यता मान राखी है के? अणजाण छोरयां नैं अेकली देखतां पाण इसा कोजा घिन्न भरया प्रस्ताव राखो। आपरी इत्ती हिम्मत कियां होयी? 'सुखमय जीवण' रा लेखक अर इसा घिन्न वाळा चरित्र! चळू भर पाणी रै मांय डूब मरो! आपरो काळो मूंडो मत दिखाओ। म्हैं अबार काकोजी नैं बुलाऊं हूं।''

म्हैं सुणतो जावै हो, कांई म्हैं सुपनो देखण लाग्यो? अै बाण म्हारै किण अपराध माथै? तो भी म्हैं हाथ छोड्यो कोनी। कैवण लाग्यो, ''सुणो कमला, जे थांरी किरपा बण जावै, तो सुखमय जीवण...''

''देख्यो थांरो सुखमय जीवण! आस्तीण रा सांप!''

''पापी!! म्हैं साहित्यप्रेमी जाण'र इसै ऊंचै विचार रा लेखक समझ थांनै घर मांय बाड़्या अर थांरो बिस्वास अर सतकार कर्‌यो। ओह! पवितर जीवण री प्रसंसा रै मांय फारम रा फारम काळा करण वाळा, थांरो हिरदो इसो! कपटी! विष रो घड़ो...'' काकोसा कैयां जावै हा।

उणां रो धाराप्रवाह बंद हुणी में कोनी आवै हो...। म्हैं भी रीसां बळतां कैयो, ''बाबू साब, जबान संभाळ'र बोलो। म्हैं भी आखर सीख्या है अर थोड़ी सभ्यता भी सीखी है। थे धरम-सुधारक हो। जे म्हैं उणरै गुण अर रूप माथै आसक्त हुयग्यो, तो म्हारो पवित्तर परिणय उणनै क्यूं नीं बताऊं? पुराणै जमानै रा बाप दुराग्रही होंवता सुण्या है। थे क्यूं सुधार नै लजायो है?''

''थूं सुधार रो नांव मत लै। थूं तो पापी है। सुखमय जीवण रो करता हुय'र भी...भाड़ में जावै—सुखमय जीवण!''

'' 'सुखमय जीवण' रै करता कांई सौगन खायी है कै जलम-भर कंवारो ई रैसी? कांई बीं नैं प्रीत कोनी हुय सकै? कांई बीं में काळजो कोनी हुवै?''

''हुंऽऽअ, जलम भर कंवारो?''

''हुंऽऽअ कांई? म्हैं तो थांरी बेटी सूं अरज करै हो कै जियां बा म्हारो हिरदो चोरी करयो है बियां जे आपरो हाथ म्हारै हाथ में देवै, तो उणां रै साथै 'सुखमय जीवण' रा उण आदरसां रो जीवण में अनुभव करूं, जिका अजै तांई म्हारी कल्पना रै मांय है ।... पण थे तो पैलां ई दुरवासा बण बैठ्या।''

''तो आपरो ब्यांव कोनी हुयो? आपरी किताब सूं तो ठाह पड़ै है कै थे केई सालां रै गिरस्थ जीवण रो अनुभव राखो हो। तो कमला री मां ही साची केवै ही।''

कमला लाज सूं आंख्यां नीची करली।...म्हैं कमला रा दोनूं हाथां नैं खींच'र म्हारै हाथां रै मांय लेय लिया (अर कमला हटाया कोनी) अर इयां च्यारूं हाथ जोड़'र बूढै सूं कैयो, ''काकाजी, बीं निकमी पोथी रो नांव मत लो। बेसक, कमला री मां साव साची है। मिनखां री बजाय लुगायां घणी चोखी पिछाण कर सकै है कै कुण अनुभव री बातां कैवै है अर कुण झूठी फेंकै है। थांरी आज्ञा हुवै तो कमला अर म्हैं दोनूं 'सुखमय जीवण' री सरुआत करां। दस बरस पछै म्हैं जिकी पोथी लिखूंला, उणरै मांय, कोरी किताबी बातां कोनी हुवै, निरै अनुभव री बातां होसी।''

बूढै जेब सूं रूमाल निकाळ'र चस्मो पूंछ्यो अर आपरी आंख्यां ई पूंछी। आंख्यां में कमला री मां रै जीत री पीड़ रा आंसू हा, या घर बैठै बेटी खातर जोगसर छोरो (वर) मिलणै री खुसी रा आंसू हा, राम जाणै। बा मुळकती थकी कमला सूं कैयो, ''दोनूं म्हारै लारै-लारै आओ।''

''कमला! थारी मां साची कैवती ही।'' बडेरो आदमी बंगलै कानी व्हीर हुयग्यो। उणरी पूठ दीखतां ई कमला आपरी आंख्यां मींच'र म्हारै कांधै माथै सिर राख दियो।

❖❖

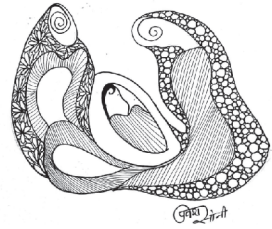

डॉ. मंगत बादल

सबदां रो सफर

सबदां रो सफर घणो लंबो है। भासा वैज्ञानिकां रो कैवणो है कै सैकड़ूं या हजार बरस बीत्यां पछै ई किणी भासा में थोड़ो-घणो बदळाव आवै पण जद तकनीक बदळै तो इण बदळाव में घणी तेजी आ जावै। लारलै अेक सईकै में विज्ञान जितरी तरक्की करी है, इणरै कारण दुनिया री आखी भासावां में जितरा बदळाव आया है बै इतरा जादा है कै कोई सौ बरस पैली आळो मिनख उठ'र धरती माथै आ जावै अर आपरी भासा नै पढै तो उणनैं अबखाई मैसूस हुवैली। विज्ञान री प्रगती सूं दुनियां आज छोटी हुयगी। कठै री कोई भी खबर चंद पलां में आखी दुनियां में फैल जावै। इण प्रगति सूं दुनियां री हजारूं भासावां माथै आपरो अस्तित्व बचावण रो संकट आ पड़्यो है। भासावां नीं बची तो उणरी संस्कृति कीकर बचैली ? कांई करयो जावै ? प्रगति रो पहियो पाछौ लारनै तो चाल कोनी सकै। तकनीक बदळण सूं मिनख रो जियां-जियां जीवण बदळै, उणरी जरूरतां अर रैण-सैण आद सो-कीं बदळ जावै। बै सबद जिका कदै जबान माथै चढेड़ा हुवै अर जिकां नै आपां बेरो नीं दिन में कितरी बर बोलां, बै ईज जद बदळतै बगत में साथै नीं चाल सकै तो बां मांय सूं कीं तो अतीत रै जंगळ में चल्या जावै अर कदै पाछा कोनी आवै अर कीं पोथियां अर सबदकोसां री सरण ले लेवै। जद कोई शिक्षार्थी या शोधार्थी बां नैं सोधै तो बठै बै सीत समाधि लियोड़ा लाधै। म्हनैं लागै, अठै सीत समाधि कैवणो भी ठीक कोनी, क्यूंकै सीत समाधि तो अेक अरसै पछै

ठिकाणो :
शास्त्री कॉलोनी,
रायसिंहनगर-335051
मो. 9414989707

 ISSN : 2320-0995

टूट जावै अर समाधिस्थ प्राणी में दुबारा जीवण रो संचार हुय जावै, पण पोथियां अर कोस में गमेड़ा सबदां री नूंवी पीढी नैं पिछाण करावण सारू घणी खैचळ करणी पड़ै। इण कारण कैय सकां कै बै सबदकोस में 'ममी' बणनै पड़्या रैवै। बां सारू ममी नांव ई चोखो रैवैलो। अैड़ा हजारूं सबद ममी बणेड़ा पड़्या है अर लाखूं बगत री बेकळू हेठै दब'र आपरो अस्तित्व खो चुक्या है।

भासा री जातरा अणंत हुवै तो साथै-साथै बा विस्तार भी करती रैवै अर उण मांय सूं उपभासावां, बोलियां रो बिगसाव भी हुंवतो रैवै। वैदिक संस्कृत सूं लेय'र खड़ी बोली (हिंदी) तांई पूगतां-पूगतां कितरी भासावां रो जनम हुयो अर कितरी दम तोड़गी, इण रो पूरो ब्यौरो तो इतिहास में ई कोनी मिलै। वैदिक संस्कृत सूं निकळेड़ी भासावां जिकी आज भी आपां नै मिलै, बां रै सबदां रै माध्यम सूं थोड़ो-घणो इतिहास जरूर समझ्यो जा सकै। इण बिचाळै जिकी भासावां खतम हुयगी, बां रै सबदां साथै ई उण बगत रो इतिहास भी खतम हुयग्यौ। आज जद संस्कृत रै केई मूळ सबदां रो इतिहास पढां तो घणो अचंभो हुवै। म्हैं अठै सिरफ तीन सबदां रो उदाहरण देणो चावूं—कुशल, निपुण अर प्रवीण। पुराणी संस्कृत मुजब कुशल रो मतलब हुवै जिकौ दूसरां रै मुकाबलै में ज्यादा घास उपाड़ लेवै। कुशल सबद पसु-पालन जुग रो लागै अर निपुण जद मिनख गाभा पैरणा सरू करग्या यानी कृषि जुग रो। निपुण उण मिनख नै कैवता जिका मुकाबलै में रूई सूं पूणी तावळो बणा लिया करतौ। इणी'ज भांत वीणा बजाणै में दक्ष मिनख नै प्रवीण कैवता। इण सूं बेरो लागै कै प्रवीण उण जुग रो सबद है जद मिनख नै कीं आमोद-प्रमोद री फुरसत मिली। अब आं तीनूं सबदां रो मतलब कमोबेस अेक सरीखो ई है। सरू में कुशल, निपुण अर प्रवीण रा चायै अलग-अलग अरथाव हा, पण कालांतर में औ भेद खतम हुयग्यो। हरेक मामलै में दक्ष हुवणाळै सारू अलग सबद याद राखणो घणी अबखाई आळो काम है। अैड़ा सबद जे सरुवात में हा भी तो बै होळै-होळै गायब हुयग्या।

भासा या भाखा रो मतलब हुवै भाखणो या कैवणो। कैवण या बोलण सबद में भी अंतर है। कैवण में अेक निरदेस हुवै जद कै बोलै तो पसु-पक्षी सगळा ई है। मिनख रै गळै में अैड़ी विसेसता है कै बो आपरै बोलण में आपरै भावां अर विचारां नै दूसरां तांई संप्रेषित कर सकै। आपरी भासा रै माध्यम सूं आपरै अनुभवां नै संचित कर सकै अर दूसरां नै बांट भी सकै। आ बात पसु-पक्षियां रै बोलण में कोनी। हालांकै जलचरां में डालफिन अर पक्षियां में सूवै नै किणी हद तांई मिनख आपरी भासा सिखावण री कोसिस में सफल भी हुयो है पण बै आपरै संचित अनुभवां नैं उण भासा में दूसरां नैं कोनी बता सकै। सिरफ रट्या-रटाया सबद ई बोल सकै। पुराणै जमानै में तो रिसियां-मुनियां रै आश्रमां में तोता-मैना (शुक-शुकी) संस्कृत में संवाद करग्या करता, औ भी पढणै में आवै।

इतरै बडै बिरमांड में कुदरत कठै ना कठैई हर पल आपरै चमत्कार सूं मिनख नै साक्षात्कार करवांवती रैवै। मिनख जितरो प्रकृति रै नेड़ै हुवैलो उतरी ई उणरी बुद्धी निरमळ अर ग्राह्य सगती जादा हुवैली। इण कारण बो प्रकृति नैं देख'र मैसूस कर आवणाळै खतरै नैं भांप सकै। आदि मानव में आ सगती ही। उणरै च्यारूं कानी जळ ई जळ हो। वनस्पती ही। डूंगर हा। आभो हो अर पसु-पक्षी हा। रूंखां माथै लागेड़ा फळां अर पसु-पक्षियां नैं मार बां रो मांस खाय'र बो आपरी भूख स्यांत करतौ। प्रेम, क्रोध, उत्तेजना, भूख या भावावेस में कद किण बगत उणरी जबान सूं कोई सबद निकळ्यो अर उण आपरी याद में संजोय'र धर लियो जिको पछै भी अैड़ै बगत में काम लियो गयो। इणीज भांत हरेक मिनख री जबान सूं निकळेड़ै सबदां अर अनुभवां नैं बां आपस में बांट लिया अर इण भांत बां री अेक काम चलाऊ भासा साम्हीं आई। मिनख रै मूंडै सूं पैलो सबद फूटणो कोई कम चमत्कार कोनी हो। उणीज सबद री नींव माथै म्हारो आज रो आखो ज्ञान-विज्ञान अर विकास टिकेड़ो है। मिनख प्रकृति रै पैलै चमत्कार रै रूप में आग रा दरसण कर्‍या। भभकती दावानळ सूं उणनै गरमास अर च्यानणो मिल्या, पण डर भी लाग्यो हुवैलो। आग मिल्यां पछै उण पैली बार भूंदेड़ै मांस रो स्वाद चाख्यौ। आग उणरो सिरफ सरदी सूं बचाव ई कोनी करती बल्कै जंगळी जिनावरां सूं रक्षा भी करती अर भोजन भी पकांवती। इण बिचाळै कद उण 'अग्नि' नाम दे दियो, औ तो बगत री परतां तळै दब्यौ पड़्यो है, पण अब उण साम्हीं इण आग नैं सहेज'र राखण री भोत बड़ी समस्या ही। आग जिकी उणरी रक्षक अर सहायक ही उणनै बो हरदम आपरै कनै राखण री कोसिस करतो। औ घणो अबखाई आळो काम हो। उण आभै में चमकती बीजळी देख'र सहज ई औ अंदाज लगा लियो कै उणमें भी आग है। प्रकृति कदै-कदैई संजोग रै मिस खुद नै परगट भी करणो चावै। इण कारण धरती माथै घणकरा आविस्कारां रो कारण संजोग भी है। इणी संजोगां में मिनख आग नै परगट करणो सीख्यो। सगळै महान आविस्कारां में सै सूं बडो आविस्कार मिनख रो आग खुद पैदा करणो है। आग रै प्रति मिनख बडो कृतज्ञ हो अर उण सूं डर भी लागै हो। इण कारण आग नैं देवता मान'र उणरी स्तुती करी। बै आगै चाल'र वैदिक रिचावां बणी। आग रा कोस मुजब सौ रै अेड़गेड़ में तो संस्कृत में ई नाम है जियां कै आग, अग्नि, अंचति, अनल, अन्नपति, उदर्चि, कालगति,घष्तार्चि, तमोघ्न, त्रिधामा, दब, दहन, पवि, पावक, भूतपति, मंत्रजिह्व, लूकट, लोहिताष्व, सप्तजिह्व, सर्वभक्षी, हुताशन आद। आ बात स्पस्ट कर दूं कै अै आग रा चायै कित्ता ई नांव है, पण अेक-दूसरै रा पर्यायवाची कोनी। जियां कै जिग री आग, चूल्लै री आग, अलाव री आग। इणी'ज भांत अै अलग-अलग थितियां सूं उपजेड़ा नांव है। ओ भी हुय सकै कै अलग-अलग कबीलां में बोलीजण आळा नांव हुवै अर कदै कबीलां रो कठैई अेकीकरण हुयो तो अै सगळा नांव प्रचलन में आयग्या। इणीज भांत पून अर पाणी रा भी अलग-अलग थितिया में अलग-

अलग नांव है। गुणपचास भांत री पून बताई जावै—जियां कै लू, डांफर, आंधी, जखीड़ो, पुरबा, पिछवा, सूरिया आद। आदि मानव पून नैं भी देवता मान्या क्यूंकै पून तो उणरै सांसां रो आधार भी ही। जळ भी देवता है। उण रा भी अनेक नांव है—जळ, पाणी, नीर, तोय, अंबु, आब, सलिल आद पण सगळां में फरक है। उण फरक नैं आपां भूलग्या। आदि मानव रै बै नाम संस्कारां में हा। आपां आपणा संस्कार छोड दिया तो बां नांवां री व्युत्पत्ति कीकर हुई, औ भी भूलग्या। बिरखा रो पाणी, कूवै रो पाणी, जोहड़ै, बावड़ी रो पाणी, समंदर रो पाणी, गंगा अर बीजी पवित्र नदियां रो पाणी आद। आज रो मिनख उण अंतर नैं भूल'र जे सगळै सबदां नैं पर्याय मानै तो आ उणरी अज्ञानता है। आभो, सूरज, चांद, बादळ आद सगळां रा परिस्थितियां मुजब अलग-अलग नांव है। बियां तो राजस्थानी में मेह, बिरखा, बरसात आद पर्यायवाची सबद है, पण अठै हरेक महीनै में हुवण आळी बिरखा रा अलग-अलग नाम है। जियां कै चैत महीनै में बरसै उणनै चिड़पड़ो, बैसाख में हळसोतियो, जेठ में झपटौ, साढ में सरवांत, सावण में लोर, भादुवै में झड़ी, आसोज में मोंती, काती में कटक, मिंगसर में फांसरड़ौ, पौह में पावठ, माह में मावठ अर फागण में बरसण आळै मेह नैं फटकार कैवै, पण आं सगळै नामां नैं याद राखण री खेचळ कुण करै। इण आभै रा भी गगन, अंतरिक्ष, सून्य, आसमान आद घणा ई नाम है। घटावां रा भी तीतरपंखी, कळायण आद अलग नांव अर अलग-अलग अरथाव है। आं नैं भी आज लोग भूल्यां जावै।

आदि मानव गुफावां में रैंवतो, पण जियां-जियां आबादी बधी बां कबीलां नदियां रै किनारै माथै रैवणो सरू कर दियो। इण बगत उण घासफूस सूं झूंपा बणाय'र रैवणो अर खाल रा गाभा पैरणा भी सरू कर दिया हुवैला। सिकार री बफरायत ही, पण कदै कदास सिकार नै लेय'र संघरस भी हुया हुवैला। इण भांत नूंवै-नूंवै सबदां रो निरमाण हुंवतो गयो। आं कबीलां री भासा में भी अंतर तो हुंवतो ई हुवैलो। इण भांत मिनख री प्रगति रो रथ चाल पड़्यो। उण कनै संवेदनसील हियौ, निरीक्षण करण आळी दो आंख्यां अर तेज दिमाग हो। बो जिको कीं देखतो-सुणतो, उणनैं गुणतो अर आपरी बुद्धि सूं निरणै लेंवतो। काचै मांस सूं भूंदेड़ो मांस अर फळ पछै बेरो नीं कद कीकर उण अनाज रो स्वाद चाख्यो कै आगै चाल'र उणरी जिंदगी रो आधार ई बणग्यौ। प्राकृतिक रूप सूं ऊगेड़ै अनाज री बजाय जद उण खुद बीज'र खेती करणो सरू कर्‌यो, उण दिन सूं बो खुद रै साधनां माथै विस्वास कर जीणो सीखग्यो। इण भांत बो जद खेती करण लाग्यो तो दिन-ब-दिन खेती सूं जुड़ियोड़ी नूंवी-नूंवी सबदावळी रो बिगसाव हुंवतो गयो। हळ, पंजाळी, खूड, आड, डोळी, पाड़, तांगड़पटिया, तंग, ढांचौ, पिलाण, रास, जेवड़ो, पिराणी, फाळो, पीनणी, बांसियो, जेई, तंगळी, चौसांगी, ढांगो, लांगो, बोरो, छाटी, लादो आद अलेखूं सबद जिका म्हारै बगत तांई चलायनै आया है, बां री व्युत्पत्ति कीकर हुई अर बां री उमर कितरी

है, आज बेरो लगाणो घणी अबखाई आळो काम है। अब जद बीसवैं सईकै में आयनै खेतीबाड़ी री तकनीक बदळगी तो आं मांय सूं घणकरा सबद तो अब सबदकोस अर पोथियां तांई सिमटनै रैयग्या। जिका बाकी बच्या है बै भी लोगां री जबान सूं उतर जावैला। आजकाल नूंवी पीढी रा करसा जिका नूंवी तकनीक सूं खेती करै, बै आं नांवां नैं भूल चुक्या है। पुराणै लोगां नैं याद है, पण होळै-होळै बै सबद अब समाज री भासा सूं दूर हुंवता जा रैया है। जियां कै जिग करणो आर्य लोगां रो नितनेम हो। आज जिग सूं जुड़ेड़ै सबदां रो कितरै'क लोगां नैं ज्ञान है? इणी'ज भांत रोजीना रै काम-काज सूं लेय'र अळगी-अळगी क्रियावां सारू हजारूं नांव हुवैला, पण बै आज कोनी। बीजै सबदां में कैयो जा सकै कै सबद मिनख री जरूरत साथै सफर करै। जरूरत खतम होणै रै साथै ई बो सबद भी समाज री जबान सूं उतर जावै अर अेक दिन लोप हुय जावै। इणी'ज कारण भासा नै बगतो नीर कैयो गयो है। बा मिनख रै विकास साथै लगोलग आगै बधती जावै। इण विकास में जरूरत सूं बारै निकळेड़ा सबद लारै छूट जावै।

आग पछै मिनख रो बडो आविस्कार पहियै रो हो। पहियो विकास साथै जुड़ेड़ो है। पहियो जियां-जियां भुंवतो गयो मानव सभ्यता रो विकास हुंवतो गयो। मिनख कनै अब तांई आपरै घरेलू उपयोग सारू पाणी भेळो करण रा साधन कोनी हा। हुय सकै उण चामड़ै सूं अैड़ो कीं बणावण री कोसिस भी करी हुवै जिकै सूं पाणी नै खुद कनै संचित कर राख सकै, पण ओ तरीको इतरो कारगर कोनी हो। पछै उण माटी सूं बरतण बणाय'र आग में पकावणा सरू करया। उणरो औ प्रयोग सफळ रैयो। अब उण नदियां रै किनारा सूं दूर रैवणो भी सरू कर दियो। आज जिकी भी पुराणी सभ्यता दुनिया में कठैई मिली है, बां में माटी रा भांडा जरूर मिल्या है। बै इण बात रा सबूत है। माटी सूं जिका बरतन बणाया गया इण सूं भी घणै ई सबदां रो निरमाण हुयौ। माट, मटको, घड़ो, कळस, भांडो, मूंण, झाकरियो, हांडी, कढावणी, कुलड़ियो, ढकणियो, तवो, परात, घिलोड़ी, सिकोरो, करवो आद बरतण माटी रा ई हा। आवो (निहाई) चाक आद सबदां रो निरमाण भी इण जुग में ई हुयो हुवैलो। इण भांत माटी रो उद्योग दुनियां में सै सूं पैली थापित हुयो अर कुम्हार पैलो उद्योगपति हो। आज जद घरां में माटी रै बरतणां री मांग पांच प्रतिसत ई कोनी रैयी तो अै सबद भी अेक दिन गायब हुय जावैला। स्हैरां, गांवां में जद सूं फ्रीज आयग्या घरां में घड़ा अब कम ई मिलै। इणी'ज भांत किरसां रै घरां में कदै कढावणी, डोई, झाकरियो, बिलोवणो, झेरणियो, ने'ड़ी, नेतरो, न्याणो आद सबदां री आठूं पौर गूंज रैंवती आज बां री जग्यां बीजा सबद ले चुक्या है। गैस आणै सूं चूल्हा कोनी बळै तो बेवणी सबद नूंवै जमानै रा टाबर कीकर जाणैला? इणीज भांत हारो, तंदूर, चाकी, चूल्ल, म्यानी, किल्ली आद सबद भी अेक दिन गायब हुय जावैला। कैवण रो मतलब है कै जद नूंवी तकनीक घरां में आयगी तो पुराणा सबद याद कुण राखै? जियां कै झेरणियै री जग्यां मिक्सी

आयगी। झेरणियो बेरड़ी या उण री झाड़की री जड़ सूं बणायो जावतौ। अब कुण इतरी मेहनत करै। अब अै सबद समाज री भासा में नीं, बल्कै पोथियां में ई मिलैला। इण भांत ई कूवै सूं पाणी काढण सारू बारो हो, जिको मिनख बारै नै संभाळतो बो बारियो, इयां ई कीलियो, लाव, खेळ, कोठो आद सबदां नैं भी नूंवी पीढी कोनी जाणै। कूवां, जोहड़ां, बावड़ियां माथै पाणी लेणै सारू आज कुण जावै? पिणघट खतम हुयग्या तो पणिहारणां कठै लाधसी? घरां में टूंटियां लागगी। कैवण रो मतलब है कै बदळतै जुग साथै-साथै भासा भी बदळती जावै। मिनख जद कीं थम'र सोचै, उण बगत ई औ बदळाव लखावै वरना जियां नदी में बगतो पाणी अेक सरीखो लागै बियां ई भासा लागै।

ताम्र जुग, लोह जुग और ना जाणै कितरा जुग आया अर चल्या गया। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, नील नदी री सभ्यता रो विकास अर पतन हुयो। और भी कितरी ई सभ्यतावां रो विकास अर विणास हुयो, पण काळ रो रथ बिना थम्यां आगै बधतो गयो। उणरै साथै-साथै ई चालता रैया सबदां रा काफला। बां मांय सूं केई मरग्या तो केई नूंवी जमीन माथै पनप'र बठै री माटी में रच बसग्या। इण भांत सबदां आपरी यायावरी प्रवृत्ति कोनी छोडी। पंछियां री भांत बै भी देस-काळ री सीमावां सूं ऊपर है। बै जिकै देस री भासा में जावै बठै इतरा रळ-मिल जावै कै आप पिछाण ई कोनी सको कै बै कठै रा मूळ निवासी है। आर्य सभ्यता, द्रविड़ सभ्यता, रोमन सभ्यता अर बीजी अनेक सभ्यतावां में सबदां रो आणो-जाणो हरेक जुग में लगोलग जारी रैयो है।

प्रगति अर विकास साथै-साथै चालण आळी प्रक्रियावां है। इण बात रो दुख भी नीं करणो चाईजै, पण सहेजण आळी बातां सहेज'र भी राखणी चाईजै वरना आगली पीढी आप री जड़ां नै कीकर पिछाणैली। सबदां साथै जातरा करण सूं आपां आपणै इतिहास सूं परिचित हुय सकां। विद्वानां रै लिखेड़ै इतिहास में विवाद हुय सकै पण जद आपां नै सबद रै असली इतिहास रो बेरो लाग जावै तो गड़बड़ी री संभावना कोनी हुवै। आज भारतीय समाज में अणगिणत रूढियां, रिवाज अर अंधविस्वास चालै। बां सूं जुड़ियोड़ा सबदां री जातरा रै इतिहास री पड़ताल सूं बां रै उत्स रो बेरो लाग सकै। जड़ां सूं जुड़णो या आपरो मूळ पिछाणनो कोई हरज री बात तो कोनी!

❖❖

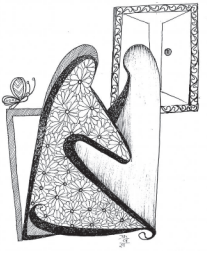

माधव नागदा

व्यक्तित्व नैं निखारै है साहित्य

4 अप्रेल, 2005

31 मार्च री रात नै म्हैं अहमदाबाद रवाना व्हैग्यो। साथै हा म्हारा साळा जी डॉ. द्वारिकाप्रसाद नागदा, घरणी शांता अर तसलीमा नसरीन। तसलीमा साखात तो नीं,'द्विखंडित' रै रूप में। 'द्विखंडित' तसलीमा री बांग्ला भासा री आतमकथा रै हिंदी उल्था रो चौथो खंड है। म्हैं नाथद्वारा रै जिला पुस्तकालय में चार ई खंड मंगवाया है। सै सूं वत्तो विवादी अर आथूणै बंगाल री मार्क्सवादी सरकार कानी सूं प्रतिबंध लाग्योड़ो है इण कारण म्हैं पैली 'द्विखंडित' नै ईज भणवा री ठाणी।

पण म्हैं अहमदाबाद 'द्विखंडित' भणवा नीं गयो हो । म्हैं गयो पेट री जांच करावण नै। वो भी द्वारजी अर शांता रै घड़ी-घड़ी कैवण रै पाण।

नाथद्वारा ट्रांसफर केड़ै पेट री गड़बड़ी बधती ई जावै ही। डाक्टर अेसिडिटी रो इलाज करता रैया। कीं टेम पैली सर्जन डॉ. पुरोहित सोनोग्राफी कीधी तो गालब्लेडर में भाटा भरियोड़ा मिल्या। मेवाड़ी में कैणावत है कै 'उण रै पेट में भाटा भरिया है।' मतळब घणो धूर्त है। म्हैं तो सीदो-साचो आदमी हूं, फेर भी पेट में भाटा! ये भाटा घणा आंटा काढै। महीना में दो-तीन वेळा तो इतरो दरद कै पूछो मती। सहन नीं व्है। बेचैनी, उल्टियां, कड़वो पाणी। धीमो-धीमो दरद तो बारोमास बण्यो ई रैवै। हाथ, पेट माथै रो पेट माथै। बिचाळै जोड़ायत म्हनैं डूंगरपुर भी लेय'र गई। वठै अेक

ठिकाणो :
लाल मादड़ी
(नाथद्वारा) राजस्थान
मो. 9829588494

 ISSN : 2320-0995

मौलाना है जको तंतर बळ सूं पथरी काढ'र आपरी हथेळी पर मेल दै। साढू जी रै गुर्दा में पथरी बणगी ही। वो ई जानकाढू दरद। मिनख कूकड़ो लोटै ज्यूं लोटै। वै मौलाना कनै सूं पथरी निकळवा'र आया अर बोल्या कै वाकई में चमत्कार है। बिना किणी चीरा रै पथरी निकाळ आपरै हाथ पै धर दै।

जोड़ायत कैयो कै चालो जिकी बात करो। आपरी साइंस नै थोड़ी देर कोरै मेल दो, न परा चालो। म्हैं गयो। मरतो कांई नी करतो। म्हैं म्हारी साइंस नै लपेट'र पेटी में मेल दीधी अर चालतो बण्यो। बियां ई अब विज्ञान अर तरक रा दिन गण्या-कूंत्या ई बच्या है। घणा दिन रा पांवणा कोनी। अब तो सरधा अर विसवास (अंध) रो जमानो दरूजा पै ऊभो है। मौलाना सा रै बगुला री जात रो धोळो फट कुड़तो-पाजामो। धोळी ई दाढी। ओजवान चैरो, मोवणी मुळक। टेबल पै मोबाइल। घड़ी-घड़ी घंटियां बाजै। फोन कदै लंदन सूं, आस्ट्रेलिया सूं तो कदै दिल्ली, मुंबई सूं। म्हैं तो दंग रैयग्यो। घणो जबरो डाक्टर है भाई। देसां-देसां ठावो। वांरै कैवतां ई म्हैं झट कमीज ऊंचो कीधो। डाक्टर साब चक्कू हाथ में लेय'र नेड़ै सरकिया। अेक वेळा तो म्हारै डील में ठाड वळगी। कठै चीरो नीं लगाय देवै। पण मौलाना पेट पै चक्कू फोरो-फोरो फोरियो न ये लो, पथरी म्हारी हथेळी में। भूरा-भूरा तीन-चारेक नैना-नैना कांकरा, सूखा खणक। पत्नी नै ले जाय'र बताया। बीं म्हारै कानी यूं नाळ्यो जाणै कैवती व्है, ''देख्यो, म्हैं नीं कैयो हो!'' उण सरधा सूं पचास रुपिया टेबल माथै मेल्या। पछै म्हां वठा सूं ईज कीं आयुर्वेदिक दवायां खरीद'र रवानै हुया।

म्हनैं विस्वास नीं आयो। पथरी पेट सूं निकळी तो सूखी कींकर?

मधरो-मधरो दरद काटतो ई रैवै। इणीज कारण अहमदाबाद राजस्थान हॉस्पिटल में जाय'र जांच करावण रो तै कीधो। अठै भी पथरीज आई। डाक्टर कैयो कै घणा दिन व्हैग्या है। गालब्लेडर भाटा सूं फुल है। बम लेय'र फिरो हो। कदी भी फूट सकै। ओपरेशन झट करावो।

अनु अर सुरेश जी इण सर्वेक्षण में लागा है कै उदयपुर में इस्यो कुशल सर्जन कुण है। अेमदाबाद रै वास्तै तो म्हैं मना कर दीधो। 'द्विखंडित' है ज्यूं री ज्यूं पाछी। अेक ओळ तक नीं भणी।

काल रात डॉ. कुंदन माळी रो फोन आयो। म्हैं पूछ्यो, ''कठै सूं बोलो हो?''

''कब्रिस्तान सूं।'' अेक मोबाइल तोड़ ठहाको, फेर ''अहमदाबाद क्यूं गया?''

म्हैं सगळी बात विगतवार बतायी। वै बोल्या, ''गालब्लेडर निकळवाणो पड़ैला। म्हारै भी या ईज समस्या ही। 2001 में म्हैं भी ओपरेसन करवायो, राजस्थान हॉस्पिटल मे ईज। डायरी कद छपैला?''

''डायरी 'सोनेरी पांखां वाळी तितलियां'। पांडुलिपि त्यार है। पुस्तक सदन नै देणी है। राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर पोथी छपावण सारू छः हजार अनुदान घोषित कीधो है।''

22 अप्रेल, 2005

आठ अप्रेल ओपरेसन व्हैग्यो। शर्मा अस्पताळ, कांकरोली में। कवि मिंतर किशन कबीरा रै होवण सूं म्हनै घणो थावस बंध्यो। वै यूं तो राजसमंद रा सरकारी अस्पताळ में सीनियर कंपोडर है, पण पूरो टेम ओपरेसन थियेटर में बण्या रैया। आपणा राम तो बेसुध हा, बाद में ठा पड़ी कै कमर मेवाड़ी, अफ़जल खां अफ़जल, जवानसिंह सिसोदिया, अनु, अखिल, अखिल रा दोस्त इरफान, महेंद्र बारै कक्ष में टी.वी. स्क्रीन पे आंख्यां गाड'र लाइव ऑपरेसन देख्यो। अढाई घंटा लागा। पित्त री थैली फूल'र कुप्पो व्हैगी ही। वा अेक कानी लीवर सूं तो दूजी कानी आमाशय सूं चिपकगी। छोडावणी भारी पड़गी। डाक्टर शर्मा कैयो कै यो म्हारै जूण रै अबखा ओपरेसन मांय सूं अेक हो। कांई करां, आप कमाया कामड़ा किणनै दीजै दोस। यो म्हारी ईज लापरवाही रो फळ हो। अगर म्हैं वेळाछति ओपरेसन करवा लेतो तो या नौबत क्यूं आवती। पण ओपरेसन रो भै। बायणा पे बायणा। कदी आयुर्वेदिक दवायां रै चाळै लागो तो कदी होम्योपैथी रै। कदी पाथरचटा रा पाना चाब्या तो कदी छाछ में कलमी सोडो नाख'र ठबकारियो। तंतर-मंतर री सरण में जावा री भी सरम कोनी कीधी। दिनोदन भाटा बधता रैया।

'द्विखंडित' कांकरोली शर्मा अस्पताळ में भी म्हारै कनै ई ही। ग्लूकोज री बोतल ज्यूं ई खतम होवती, सराणा रो सायरो लेय'र बैठ जावतो। चार-पांच पाना ई भणतो कै मीठी घुड़की पिला'र घरणी जी किताब खोस लेंवती। पाछो सोवणो पड़तो।

अठै गांव में भी म्हैं तसलीमा रो लारो नी छोडियो। 'द्विखंडित' जैड़ी मोटी पोथी नै पूरी भणिया ई मान्यो। जिका मिनख तसलीमा नैं सांगोपांग भणी नीं है, वै तो यूं ईज कैवै, ''आप बीती कै अश्लील बयान का नाम है तसलीमा'' (स्वामी वाहिद काज़मी, संबोधन, अप्रेल-जून, 2004)। पण अगर आपां तसलीमा नै ध्यान सूं भणां, वा कांई कैवणो चावै या बात समझण री कोशिश करां, उणरी दीठ, उण रा विचार, उण रा सरोकार नैं जाणवा री खैचळ करां तो अेक न्यारी ही तसलीमा आपां रै साम्हीं आवै। नारी मुगती रो अदबद अर साहसिक सुपना रो दूजो नांव है—तसलीमा नसरीन। वा दनिया री उण सैंग धर्मांधता रै खिलाफ ऊभी है जको नारी नै दोयम दरजै रो जीव बणावणो चावै है। इस्लाम तो बीं रो प्रस्थान बिंदु है। तसलीमा नसरीन धरमनिरपेखता, बराबरी अर न्याव आधारित लोकतंतर री घणघोर पखधर है। बीं नैं इणरी कांई कीमत चुकावणी पड़ी है, आपां सै जाणां। आज वा दुनिया में दर-दर री ठोकरां खावै है। जीव सूं भी वत्ती व्हाली मायड़भोम नैं तज'र लुकती-छिपती, सरणारथी बण जीवै है। फेर भी वा अडिग है। बीं नैं सलमान

रुश्दी री दांयी माफी मांगणो गवारा नीं है, आपरा सिद्धांतां सागै समझौतो करणो मंजूर कोनी है।

'द्विखंडित' में बांग्ला संस्कृति रा भी घणा मोवणा चितराम साम्हीं आवै। वठा रै मिनखां रो रवीन्द्र संगीत सूं हेत अर पोथीप्रेम गीरबैजोग है। तसलीमा रै कस्बा रो नांव मयमनसिंह है अर बीं रै अब्बा रै घर रो नांव है—'अवकाश'। वा जिण अस्पताळ में डाक्टर है, वो है—सूर्यकांत हॉस्पिटल। तसलीमा रै भाई री जोड़ायत रो नाम गीता है तो भतीजा रो सुहृद। बांग्ला देश में हिंदू-मुसळमान में विवाह आम बात है। वठै मुस्लिम लुगायां भी साड़ी पैरै, बिंदी लगावै। बांग्ला तो सै री मायड़ भासा है ईज। भासा ईज सगळा नै जोड़ राख्या है। बांग्ला देश सूं छपण आळी कीं पत्रिकावां रा नांव है—पूर्वाभास, विचिंता, सुगंधा, सांझा-बाती, दिनकाल, अेकता, संवाद आद। प्रकाशक है—विद्याप्रकाश, अनिंद्य प्रकाशनी, ज्ञानकोष प्रकाशनी, अंकुर प्रकाशनी।

पण 6 दिसंबर, 1992 रै दिन सूं इण गंगा-जमनी संस्कृति रै पवित्तर जळ में जैर घुळग्यो।

ढाका में हर बरस पोथी मेळो भरावै। मेळा में हजारू पोथियां बिकै। प्रकाशक लोग लेखकां नैं बुला'र आप-आपरी स्टाल पे बैठावै। इण सूं बिकरी फेर बध जावै। पाठक आपरा मनपसंद लेखक री पोथियां खरीद'र उण रा ऑटोग्राफ लेवै। इतरी बिकवाळी व्है कै मेळा रै दौराण ई केई-केई संस्करण छापणा पड़ जावै। पोथियां भी साहित्यिक।

भारत में भी व्है पोथी मेळा। अठै सै सूं वत्ती बिकण आळी किताबां है—योग द्वारा चिकित्सा, प्राणायाम कैसे करें, दिव्य औषधियाँ, याददाश्त बढ़ाने के गुर, साक्षात्कार कैसे दें, सफलता का रहस्य, परीक्षा में अधिक अंक कैसे आये, घरेलू चिकित्सा आद। युवा पीढ़ी ने आप आज रा लिखारा रा नांव पूछो तो वै बगलां झांकण ढूकै। कारण कांई है? समकालीन रचनाकारां रा नांव समै रा स्यामपट्ट माथै चमकै क्यूं नीं है? कांई आज रा लेखन में वा ताकत नीं है? कांई आज रा लिखारा भारतीय जनमानस री अभिव्यक्ति करण में सफळ नी व्है सक रैया है? कै आज रै मोट्यारां में बेरोजगारी रो भै है, जिण रै पाण वै आपरो चूकतो ध्यान कैरियर माथै केंद्रित कर राख्यो है? अब वांनै कुण समझावै कै साहित्य व्यक्तित्व नै निखारै अर यो निखार कैरियर में घणो काम आवै।

24 अप्रेल, 2005

आज कुंदन माळी मिलवा नै आया। अवतां ई पूछ्यो, ''ओपरेसण व्हैग्यो?''

''हा, व्हैग्यो।''

'अब आपां दोई अेक जैड़ा व्हैग्या। म्हारै भी गालब्लेडर नीं है।''

''अब म्हैं भी आप जिस्यो मोटो लेखक बण जाऊंला।''

कुंदन ठायको लगायो।

कुंदन माळी राजस्थानी आलोचना में अेक मानीतो नाम है। अठीनै वणा राजस्थानी कविता रो नूंवो मुहावरो गढ्यो है। लोकोक्तियां अर मुहावरां रो सटीक प्रयोग करता थकां बारीक व्यंग्य री धारदार कवितावां रै पाण पाठकां रो ध्यान खैंचण में सफळ व्हिया है। कविता संग्रै 'सागर पांखी' नैं राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रो सूर्यमल्ल मीसण शिखर सम्मान मिल चुक्यो है। इणीज बरस अेक गुजराती कृति रै राजस्थानी अनुवाद ताणी साहित्य अकादेमी, दिल्ली भी वांनै अनुवाद पुरस्कार सूं सम्मानित कीधा है। अड़तालीस बरस री उमर में इतरी उपलब्धियां पावण वाळो लिखारो बडो तो है ई। कुंदन माळी इण बडपणा नै लुकावै भी नीं है।

'सोनेरी पांखां वाळी तितलियां' छपगी है। काल ई अखिल उदयपुर जाय' र पचास प्रतियां लेय आयो है। पुस्तक सदन छापी है। म्हैं घणै प्रेम अर हरख सागै कृति री पैली प्रति कुंदन भाई नैं भेंट कीधी। फ्लेप अणां ईज लिख्यो है, ''आधुनिक राजस्थानी साहित्य में डायरी विधा रै विगसाव री दीठ सूं माधव नागदा री डायरी पोथी 'सोनेरी पांखां वाळी तितलियां' री निजू, न्यारी अर महताऊ ठौड़ फगत विधा सिमरिधी रै कारण ईज नीं है, बल्कै इण पोथी में दरज 19।9 सूं लेयनै 2002 सुधी रै समै-परिवेस रा अणगिणत रंगां, समाज वैवस्था की तासीर, राजनीतिक तंत्र री कारगुजारियां, दाव-पेंच अर पाखंड रा जीवंत चितराम उकेरण रै नजरियै सूं ई उल्लेखजोग है...।''

''गेटअप चोखो है।'' कुंदन बोल्या। पछै पाना पळट'र आगै जोड़ियो, ''भाषा कमजोर है। गैराई नीं है। कठैई तो फगत अेक लेण सूं काम चलायो है। विधा री दीठ सूं इण पोथी रो जरूर महत्त्व है पण...।''

''आप फ्लेप माथै तो कीं और ई लिख्यो है।'' म्हैं याद दिरायो।

कुंदन हांस्या, ''म्हैं आपणा लिख्या पै कायम हूं अर इणनै सही साबित कर सकूं।''

म्हैं बोलबालो व्हैर फगत कुंदन नैं देखतो रैग्यो। म्हनैं चेखव याद आया। वणां कैयो है कै आलोचक कुकरमाखी ज्यूं व्है जको घोड़ा री चाल बिगाड़ण रो काम करै। पण कुंदन सूं बंतळ करतां म्हनैं अेक नूंवी परिभासा सूझी—पाको आलोचक वो, जको भाटै नैं भगवान अर भगवान नैं भाटो साबित कर सकै।

कुंदन आगै आपरै मन री बातां कीधी, ''म्हैं अंगरेजी रो आदमी हूं, पण जद किणी पोथी रो राजस्थानी में उल्थो करूं तो पाठक कै नीं सकै कै यो अनुवाद है, भाषा रो इस्यो प्रवाह। आपनै जद 1987-88 में राजस्थान साहित्य अकादमी रो पुरस्कार मिल्यो तद सूं तो म्हैं लिखणो सरू कीधो। आज तक अेक दरजण पोथियां छप चुकी है। घणी मैणत करूं हूं। पुरस्कार यूं ई नीं मिलग्या है। भाईलोग म्हनैं अहंकारी समझै, पण म्हैं अहंकारी नीं हूं। खरी-खरी कैवण री आदत है जिणरो मिनख बुरो मान जावै। खरी बात सुणावा या लिखवा में म्हैं किणी रो भी लिहाज नीं करूं भलां ई वो कित्तो ई बडो साहित्यकार क्यूं नीं होवै।''

म्हैं आपरी खिसियाट मिटाण सारू भगीरथ द्वारा संपादित अेक पोथी कुंदन साम्हीं कीधी। ''अरे, आप माथै पूरा सात पाना! आज दिन तक किणी म्हारै पै सात लेणां तक नीं लिखी।''

''आप तो आलोचक हो यार। किंग मेकर। आप पै कुण लिख सकै। आप लिखो दूजा माथै।''

''हां, साहित्य री दुनिया में दो काम ई सै सूं अबखा है। अेक उल्थो अर दूजो आलोचना। म्हैं ये दोई काम करूं।''

इतरा अबखा काम करणियै भलै मिनख आज म्हनैं अबखो कर नाख्यो।

❖❖

फार्म नं. 4, नियम-8

पत्रिका रो नांव	:	राजस्थली
प्रकाशन री ठौड़	:	श्रीडूंगरगढ़
प्रकाशन री अवधि	:	तिमाही
मुद्रक	:	महावीर माली
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
प्रकाशक	:	महावीर माली
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
संपादक	:	श्याम महर्षि
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
उणां शेयर होल्डरां रा नांव अर ठिकाणा, जिणा कनै कुल पूंजी रा 10%सूं बत्ता शेयर है	:	कोई कोनी

म्हैं महावीर माली घोसित करूं कै ऊपरलो विवरण म्हारी जाणकारी अर विस्वास रै मुजब सत्य अर वास्तविकता माथै आधारित है।

महावीर माली
प्रकासक

बसंती पंवार

पाणी पैलां पाळ

आंधा में काणा राजा होवै ज्यूं अेक लेखक हा—झटपटलाल जी। उणां नैं लिखण रो घणो चस्को हो। सरीर सूं तंदरुस्त हा पण अेक मोटो रोग लाग्योड़ो हो अर वो हो—छपास रोग, अर औ रोग अैड़ो है, जिणरो कीं ईलाज नीं है। यूं वै घणा दूरदर्सी हा। सोचता—बडेरां कैयो जिको गलत नीं कैयो कै 'पाणी पैलां पाळ' बांध लेवणी चाईजै। सरीर रो कांई ठाह पछै कांई हाल हुवै? मांदा पड़ जावां, बगत मिलै कै नीं मिलै, हाडका चालै कै नीं चालै। करणो तेवड़ियो जिको फुरती सूं कर लेवणो चाईजै। पछै तो पछै ईज है।

वै लगौलग कहाणी, कविता आद कीं र कीं लिखता ई रैवता अर दूजा मोटा नामी-गिरामी लेखकां रै जियां आपरौ उपनाम ई राख दियो—झटपटलाल 'स्वर्गीय'। औ स्वर्गीय उपनाम लोगां रै अचूम्भै रो विसय हो। लोग सोचता कै स्वर्गीय तो मरियां पछै हुवै, औ जींवतो ई स्वर्गीय कीकर हुयग्यो? केई लोग उणां नैं इण बाबत पूछ्यो, तो पडूत्तर मिल्यो ''आ ई तो राज री बात है।''

वो आपरै नांव मुजब उतावळो ई घणो हो। कोई तिंवार आयां रै साल भर पैलां ई उणरै बारै में कहाणी, कविता कै आलेख लिख'र त्यार राखतो। अठै तांई तो ठीक...पण वो जाण-पिछाण अर मोटा-मोटा अफसरां री श्रद्धांजळियां ई लिख-लिख'र धर दी ही अर लिफाफा माथै पतो-ठिकाणो लिख'र उणमें घाल'र धर दी ही। तारीख, वार री अर बरस री जग्यां खाली छोड राखी ही। वो सोचतो—''कांई ठाह , पछै बगत मिलै कै नीं मिलै।''

ठिकाणो :
90, महावीरपुरम
चौपासनी फनवर्ल्ड लारै
जोधपुर-342008
मो. 9950538579

 ISSN : 2320-0995

अेकर उणरो भायलो मिलण नै आयो। बातां-चीतां करतो बोल्यो, ''थनैं ठाह है?''

''कांय री?''

''फकीरचंदजी सेठसाब चालता रैया।''

''आ खुसखबरी तो थूं चोखी सुणाई।''

''खुसखबरी! पण आ तो मौत री खबर है।'' वो अचूंभै सूं बोल्यो।

''अरेऽऽ आ ई तो काम री बात है।''

''काम री बात ! म्हैं समझ्यो कोनी।''

''थनैं ठाह नीं है कै सालभर पैलां ई म्हैं फकीरचंद सेठजी री सोक-श्रद्धांजळी लिख'र लिफाफै मांय घाल'र मेल दी ही। तारीख लगाय'र आज ई न्यारा-न्यारा अखबारां में इणरी फोटू कॉपी पुगाय दूंला। म्हैं तो बाट ई जोवतो हो कै कदै वै मरै अर म्हारै लिखियोड़ो काम आवै।''

सुण'र भायलै रो तो बाको फाटोड़ो ई रैयग्यो। वो कीं संभळतो थको बोल्यो, ''पण इणसूं थनैं कांई फायदो?''

''फायदो! थूं तो साव डोफो ई दीसै, इण रा घणाई फायदा है-अेक तो नेहचै सूं करियोड़ो काम बढिया हुवै। उतावळ रो काम तो सैतान रो कैयीजै। दूजो लिखियोड़ो त्यार हुवण सूं फटाक देणी रो अखबार रै ऑफिस पुगाय सकां जिणसूं हाथोहाथ छप जावै। म्हारो नांव हुवै अर नांव हुयां सूं फैमस हुवण रो मौको मिलै।''

''पण आ थनैं कीकर ठाह पड़ै कै कोई मरण वाळौ है? कांई जमदूत थारो भायलो है जिको मरण वाळां री लिस्ट थनै पैलां ई बताय देवै।''

''अरे ! थारै कनै तो अकल नांव री चीज ई नीं है। कांई ठाह, थारा माइत थारो नांव अकलराम कियां राख्यो। अरे भई, जिको जलम लेवै उणनैं तो अेक न अेक दिन मरणो ईज है। कोई अमर तो हुवै नीं के। पछै म्हैं थोड़ी अकल राखूं। मोटा-मोटा हाथियां री हारी-बीमारी रो ई ध्यान राखूं, जिणसूं...।''

''पण औ है तो गलत काम।''

''कीकर गलत है?''

''बापड़ै जींवतै नैं ई मार न्हाखै।''

''म्हैं कठै मारूं?''

''खबर तो मरियोड़ौ जाणनै ई लिखै है के नीं!''

''लिखियां सूं कांई हुवै? म्हैं उणरै मरियां पैला अखबार वाळां नैं थोड़ी देवूं।''

''जे उण भलमानस नै ठाह पड़ जावै तो?''

''ठाह पड़ै तो पड़ै। म्हैं थनै अेक बात बतावूं कै घणकरा लोग तो अैड़ा हुवै कै जे वांनै ठाह पड़ जावै तो वै घणा राजी हुवै अर इनाम न्यारो देवै कै औ लिखारो उणरो कित्तो महत्त्व समझै, याद राखै। और तो और, वो मांग नै पढै कै उण बाबत कैड़ी चोखी-चोखी बातां लिखी हूं। मरणो तो है ई, थोड़ा दिनां तांई तो चरचा में रैवांला। औ ईज अेक लिखारो है जिको इत्तो भलो काम करै।''

यूं कैय'र झटपटलाल जी अेक फाईल अर कीं लिफाफा लाय'र भायलै नैं बतावता थका बोल्या, ''म्हैं कोरी बातां रा भचीड़ा नीं मारिया करूं। कैऊं जिको करूं ई हूं। देख, अै लेख, अै कवितावां, अै कहाणियां अर औ देख कित्तो मोटो सागेड़ौ उपन्यास है, इणनैं बॉलीवुड में भेजण वाळो हूं। थूं देखजै, इण माथै कैड़ी जबरी फिलम बणैला। अे देख लिफाफा, इणां मांय मोटा-मोटा अफसरां, लिखारां रा सोक संदेस लिखियोड़ा है, बस मरतां ई झट करती री तारीख अर वार ईज लिखणो है अर काम पक्को। और सुण, म्हैं थनैं म्हारी अेक राज री बात बतावूं, थूं किणनैं ई कैयीजै मत। म्हैं म्हारै ऊपर ई लेख, जीवनी आद म्हारै बेटे रै नांव सूं लिख राख्या है। म्हारै मरियां पछै छोरो इणां नै छपावैला। पढण वाळां रै मांय थोड़ा दिना तांई तो फेमस रैवूंला। आगै यूं भी हुय सकै कै किणी रै शोध रो विसय ई बण जावूं। म्हैं सगळो काम घणो सोच-समझ'र करिया करूं।''

अकलराम जी खासी देर तांई बाको फाड़ियां भायलै रो मूंडो देखता रैया, पछै अेक लिफाफै नैं खोल'र उण मांय सूं कागद काढ'र पढण लागा, लिखियोड़ो हो, ''आखी दुनिया में आपरै साहित्य रो परचम लेरावणियां साहित्यकार, कहाणीकार, उपन्यासकार अर कवि झटपटलाल जी 'स्वर्गीय' रौ आज दिनांक... नै हार्टफेल हुयग्यो अर वै स्वर्गीय हुयग्या है। इणां रै स्वर्गीय हुवण सूं साहित्य रै क्षेत्र में घणो नुकसाण हुयो है, जिको कदैई पूरो नीं हुय सकैला। वै आपरै लारै दो लुगायां अर भरियो-तरियो परिवार छोडग्या। भगवान इणां री आतमा नैं सांति देवै।''

शोकाकुल :
दोन्यूं लुगायां, बेटा अर
आखी दुनिया रा लिखारा

पढ'र अकलराम जी रो बाको पाछो खुलग्यो। कीं देर पछै वै बोल्या :

''यार, थूं तो घणो झूठो है।''

''क्यूं, कांई झूठ लिखियौ ?''

''थारै तो अेक ईज लुगाई है।''

''अरे अकलिया, थारी अकल तो घास चरण नै गई है। कुण देखैला कै अेक है कै दोय। दो लुगायां रो जद लोग पढैला तो म्हैं खासा दिना तांई अखबारां मांय चरचा रो विसय रैवूंला कै नीं ? अर जे कोई अैड़ी-उड़ी बात हुय जावै तो म्हैं थारी भाभी नैं समझाय

दी हूं कै थूं थारी बैन नैं ऊभी कर दीजै। यूं ई साळी तो आधी घरवाळी हुवै। म्हैं सगळो काम पक्को करियो हूं, समझियो कै नीं।''

सुण'र थोड़ी देर तांई अकलराम जी कीं सोचता रैया अर पछै बोल्या, ''यार, अेक बात तो है कै थूं फैमस हुवण रो तो पक्को इंतजाम कर राख्यो है, पण म्हारै मगज में अेक बात आवै...।''

''कांई बात?''

''कै मानलौ, थारो छोरो इण श्रद्धांजळी री खाली जग्यां भर'र अखबार में नीं दीवी तो? क्यूंकै 'शोक संदेस' रा तो रुपिया लागै। छोरो इणनैं फालतू खरचो जाण'र...।''

''अरे गेला, म्हैं कोई काची गोळियां नीं रमी हूं। इणरो ई इंतजाम कर राख्यौ हूं।''

''वौ कांई?''

''म्हैं अेक चेक अखबार रै नांव लिख राख्यौ हूं, खाली तारीख ई लगावणी है।''

''जे छोरो चेक फाड़ दियो तो?''

''यार, थूं तो बाल री खाल निकाळै है। म्हारो छोरो अैड़ो नीं है।''

''तो ई मानल्यौ, आ खबर अखबार में नीं छपी तो?''

''तो... तो... म्हैं...फांसी खाय'र आतमहत्या कर लेवूंला।''

''जणै थूं तो मर जावैला, थनैं कीकर ठाह पड़ैला कै...।''

''अरे... थूं थारी बकवास बंद करै कै नीं? औ सैंग छपैला अर जरूर छपैला।''

झटपटलाल जी 'स्वर्गीय' इत्ता जोर सूं चिरळाया कै... कै... साच्याणी वै स्वर्गीय हुयग्या।

❖❖

मान कंवर 'मैना'

ओळूं

बात 1966 री है। म्हैं सी.लिब (सर्टिफिकेट कोर्स इन लाइब्रेरी साइंस) जोधपुर सूं कर रैयी ही। बियां कोर्स तो पत्राचार सूं ईज हो, पण अेक महीनै री प्रायोगिक क्लास ही। म्हैं जोधपुर में म्हारा पापा अर काकोसा अरथाथ दादोसा (जो एयरफोर्स सूं सेवानिवृत्त है व परिवार रै साथै जोधपुर में ईज रैवै) कनै रुक्योड़ी ही।

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय में सिंझ्या रा आठ बज्यां तक क्लास लागती ही। अेक दिन क्लास मोड़ी छूटी अर म्हैं भागती-दौड़ती बस पकड़ अर पावटा, सी रोड तक तो आयगी, पण बीजेअेस कॉलोनी में जावण वाळा टैम्पो जा चुक्या हा। अंतिम टैम्पो रै जावण रो टैम साढी आठ ईज हो। म्हैं आधै घटै तांई बाट जोवती रैयी, पण कोई साधन बीजेअेस तांई कोनी मिल्यो। नूंवी जग्यां, नूंवो स्हैर अर म्हैं अेकली लड़की, मन में घणी घबराट होवै ही। बीं टैम मोबाईल ई कोनी हा। घर में लैंड लाईन फोन भी कोनी हो, जिण पर लेट हुवण री सूचना ई घरां देय सकां। दादोसा भी रिटायर सैनिक हा, पूरा हिटलरशाही हा अर सासरै सूं पांवणी गयोड़ी पोती री पूरी जिम्मेदारी समझै हा। बां रो ई पूरो डर लागतो हो। मन-मन में जगदम्बै रो ध्यान कर ई रैयी ही कै के हे मावड़ी! आज तो साई-सैंती घरां पूगा दीजै, आईंदा तो कदैई इत्तो मोड़ो नीं करूं। म्हैं बठै ऊभी-ऊभी सगळा देवी-देवता सिंवर लिया, पण कोई साधन नीं आयो। घबराट रै मारया म्हारो हाल बुरो हो, चैरा माथै हवायां उड रैयी ही। साढी नौ बज्यां अेक रिक्सो कनै आय'र रुक्यो। अेक अधेड़-सो आदमी बारै मूंडो काढ'र बोल्यो, ''कठै जावणो है सा?''

ठिकाणो :
गांव-भवानीपुरा
पोस्ट-चौमू पुरोहितान
वाया-खाटूश्यामजी
जिला-सीकर (राज.)
मो. 9588081093

 ISSN : 2320-0995

म्हैं बोली, ''बीजेअेस कॉलोनी।''

''आवो सा, बैठ जावो।''

म्हारै मूंडै सूं घबराट अर डर रा हाव-भाव साफ निगै आवै हा।

रिक्सै आळो फेरूं मूंडो काढ'र बोल्यो, ''बैठ जाओ मैडम! अबै आपनैं इण तरफ जावण वाळो साधन नीं मिलैला।''

म्हैं डरती थकी रिक्सै मांय बैठगी। मन रै मांय इष्टदेव नैं याद कर रैयी ही। काळजो जोर-जोर सूं धड़क रैयो हो। इतरो डर तो पैली बार सासरै गई जणै ई नीं लाग्यो हो, जितरो आज लाग रैयो हो। पण इणरै अलावा कोई चारो ई तो नीं हो। म्हारै साड़ी पैरयोड़ी ही। रिक्सा आळो अंदाजो लगा'र बोल्यो, ''आप नौकरी करो हो, टीचर हो शायद?'' म्हैं बोली, ''नहीं, हाल तांई तो पढ रैयी हूं। आज क्लास थोड़ी मोड़ी छूटी तो अबेळो हुयग्यो।''

''देख बेटा, म्हारो नांव अनवर है। म्हारो घर बीजेअेस कॉलोनी सूं धकै है। म्हैं अबै घरै ईज जाय रैयो हो। थांनै अेकला नैं ऊभा देख'र रिक्सो रोक लियो। थे डरो मत, थे म्हारी बेटी व्हो ज्यूं हो, घबरावो मती।''

अनवर जी री बात सुण'र म्हारी घबराट थोड़ी कम हुयी, पण दादोसा रो डर तो हाल तांई लाग रैयो हो कै घरां जावतां ई क्लास लागणी बाकी है। म्हैं म्हारी गळी रै कनै पावर हाऊस हो, बठै पूगतां ई बोली, ''अंकल रोक द्यो, म्हारी गळी आयगी।''

''नहीं बेटी, रात री दस बजी म्हैं थांनै अेकली नीं छोड सकूं। थे म्हनैं रस्तो बताओ, म्हैं ठेठ घरां छोडनै आवूं।''

घर रै आगै पूग तो दादोसा अर दादीसा दोनूं ई दरवाजै कनै ऊभा बाट जोय रैया हा। म्हैं रिक्सै सूं उतर'र किरायै वास्तै पर्स खोल्यो अर रुपिया निकाळ्या तो अनवर जी बोल्या, ''नहीं बेटी, म्हैं किरायो नीं लेवूं, म्हनैं तो घर कानी ई आवणो हो, म्हैं तो अेक बेटी नैं सावळसर घरै पूगाई हूं।'' इतरो कैय'र अनवर अंकल फुरती सूं आगै निकळग्या।

म्हैं डरपती घर रै मांय आयी तो दादीसा बोल्या, ''बेटा, आज इतरो मोड़ो कीकर हुयग्यो, चिंता कर-कर म्हारी तो हालत खराब हुयगी।'' दादोसा री मोटी-मोटी आंख्यां म्हारै कानी जबाब री उडीक में झांक रैयी ही।

म्हैं डरपती-डरपती बोली, ''आज क्लास ई मोड़ी छूटी ई, जणै मोड़ो हुयग्यो।

दादोसा बोल्या, ''कालै मैडम नैं कैय'र आधो घंटो पेली निकळ लीजै, बता दीजै कै म्हारै घरां जावै जिका साधन मोड़ो हुयां पछै नीं मिलै।'' इत्तो कैय'र दादोसा आपरै कमरै में गया परा, पण म्हारी चितार में अनवर अंकल इयांलकी छाप छोडी कै आज इतरा बरसां बाद भी आ बात म्हनैं चेतै है अर जद ई चेतै आवै तो हियै मांय अेक सुखद अनुभूति हुवै अर अनवर अंकल रै पेटै अपार सरधा उमड़ आवै।

❖❖

डॉ. आशा शर्मा

लुकमींचणी

जीवड़ा!
नीं डरणो
अमावस रै अंधारै सूं
पख बीत्यां आवैला
ऊजळा दिन
पून्यूं रो चांद तिरैलो जद
आभै रै ताल माथै
बरसैली चांदणी झमाझम
भीजैलो थूं
चांदणी रा इमरत सूं
पण जीवड़ा!
बत्ती नीं हुळसणो
फेरूं बावड़सी काळी रातां
चालती ई रैसी
आ ईज लुकमींचणी
उजास-अंधारै री।
जीवड़ा!
समाई राखजै
जोईजै बाट
फेरूं-फेरूं
ऊजळा दिनां री।

ठिकाणो :
मार्फत सुरेन्द्र कुमार शर्मा
सीईजी टॉवर
बी-11 (जी)
मालवीय इंडस्ट्रियल एरिया
मालवीय नगर, जयपुर
मो. 9414837398

ISSN : 2320-0995

माटी रो हेलो

पांवणा दांई जावता मानखां रै
भूलग्यो ? थूं म्हारो ई जायो है !
म्हारी क्यारां अर म्हारा ई धोरा,
थनैं गोद्यां मांय खिलायो है।
म्हारी छात्यां नैं खूंदतो,
नगरां रा गेला रूंधतो
भूलग्यो रे बांका छैला !
थूं म्हारा ई दूधां न्हायो है।
बटाऊ रे ! बावड़जा पाछो,
नगरां रो पाणी कोनी आछो,
बठै कठै आम रो औ रूंखड़ो
जिणरो मीठा फळ खायो है।
म्हारा हिवड़ै मांय हीरा भर्‌या है,
हेतर तो सई अठै मोती धर्‌या है
कियां मिलसी थनैं इमरत बठै ?
जठै सगळां रो जीव तिसायो है।

हूंस

हिवड़ा रे !
समदर सो बणजै
समेटजै बिरखा नैं
आपरै आंचळ मांय
पण फेरूं बादळी
बणबा री खातर।
हिवड़ा रे !
बादळी सो बणजै
बावड़जै पाछो
धरा री गोद नैं
भरबा री खातर।

साची बात

जे नदियां जाय सागर मांय,
उणमें ल्हैरां तो मिलसी ई।
जे गेल ठिकाणै जाय मिलै,
उणमें सूळां तो मिलसी ई।

बिन ल्हैरां सूं लड़्यां कठै,
मोत्यां सूं झोळ्यां भर्‌या करै ?
सूळां सूं उळझ्यां बिना किणनैं
मनचींत ठिकाणो मिल्या करै ?

अंधार घोर सूं बिन डरप्यां,
काळी रातां में चाल मिनख
आभै री मोटी ताल मांय
दो-अेक तारा तो मिलसी ई।

भाटां रा गेला मिलै जणै,
मत डरप मिनख चलतो ई जा
ऊंची-नीची इण धरती सूं,
बाथां भर-भर मिलतो ई जा।

निसरैला कील-कांकरा भी,
पण थूं छोटो मन मत करजै
धरती री गोद्यां मांय थनैं
लालां री खानां मिलसी ही।

❖❖

डॉ. आशाराम भार्गव

बंजर आंख्यां उखड़ी सांसां

बंजर आंख्यां उखड़ी सांसा
भींतां पर फेरै हाथ बै
बिकण लागै जद घर आपरो
भींतां सूं करै बात बै

बीतै ज्यूं रात कहर री
थमतो जावै काळजो,
अेक दूजै नैं देवै दिलासा
लुक-लुक पूंछै आंख बै

आधी रातां उठ बैठै बै
घर नैं देखै घणै गौर सूं,
आंगणै नैं छूवै घड़ी-घड़ी
कर मांचै सूं नीचै लात बै

गोडां नैं जद पकड़ उठै बै
भींत बणै है आसरो,
अेक हाथ सूं भींत पकड़ता
चालै झुकी कमर पर रख हाथ बै

यादां में खो जावै दोन्यूं
जोड़्यो घर कांई सपना देख्या
औलाद साम्हीं बस नीं चालै
सेवै ऊंची-नीची बात बै।

ठिकाणो :
72, संत कृपाल नगर
कृपाल आश्रम रै कनै
श्रीगंगानगर 335001
मो. 9982068871

ISSN : 2320-0995

बदळाव

बदळ ई जावै लोग
समय सारू
आवै जद कदैई
जिकै हाथ ताकत
बदळ जावै बोली
अर
बोलण रो ढंग

आपरै नैड़ै
अर
दूर रा लोग
बियां ई बदळ जावै
अपणायत
समय सारू।

म्हारै देस में

म्हारै देस में
सारी सभ्यतावां रो राज
अर
सारै धरम अर साहित्य रो ग्यान
इत्तै में ई
भेळो हुय जावै
कद कोई बतावै
कै
म्हारी जात कांई है
अर पूछै
थारी जात कांई है।

खेजड़ी अर थूं

लोक कैवै
खेजड़ी री जड़
पाताळ तांई हुवै
अर बा
पाताळ सूं
इमरत खैंच'र
भरै उन्याळै में
खड़ी रैवै
अर
हरी रैवै
पण
कांई ठाह थूं
कठै सूं
पावै इसो इमरत
कै
सारी उमर
भोर सूं सिंझ्या तांई
खड़ी रैवै
अर
हरी रैवै।

❖❖

भंवरलाल सुथार

संवादपरक दूहा

धण : कागद लिख कंटाळगी, पिया राखै न मान।
अबकै आजा आलिजा, नीतर निकळै प्राण।।
धणी : कंटाळै मत कांमणी, कागद मिल्यो आज।
झरतां आंसू बांचियो, बेगो पूगूं भाज।।

धण : बुझिया म्हारा बालमा, दप-दप करता दीप।
डरपत थांरी डावड़ी, टप-टप टपकै टीप।।
धणी : डरप मती थूं डावड़ी, ज्योत राखो जगाय।
आवूं बेगो आंगणै, कुटी देवूं छजाय।।

धण : चूड़ै छोड्यो चिलकणो, मगसी पड़ी मजीठ।
लीरां हुयगी लूगड़ी, आप हूयां अदीठ।।
धणी : लेतो आवूं लूगड़ी, चुड़लो हाथी दांत।
दरसूं थारै देसड़ै, पीळोड़ी परभात।।

धण : धवळा धण तो धारिया, पिया बसै परदेस।
बरसां बरस बीत गया, आया नीं निज देस।।
धणी : कर मत अैड़ा कामड़ा, फंस्यो दूरां देस।
बेगो पाछो बावडूं, धारो नवला बेस।।

धण : निरीह हुयगी निरबळी, काळी पड़गी काय।
बिछोह तणो बिलोवणो, निकळै माखण नाय।।
धणी : कळप मती थूं कांमणी, कंथ कळीजो काम।
झोटा देवो झेरणै, डळियां लेवो थाम।।

ठिकाणो :
238, रामदेव नगर,
डाली बाई मिंदर रै साम्हीं
जोधपुर-342008
मो. 6376545732

 ISSN : 2320-0995

धण : गळ–गळ जावै हाडका, नाड़ां दीखै नाय।
प्रीतम रोग पांगरियो, अवेखो झट आय।।
धणी : गाळो मतना हाडका, जीमो जीमण धाप।
आधै चैत ज आवसूं, ओखद देवूं आप।।

धण : पतळी पड़ी पारवती, सूखो जाय सरीर।
बेदम हूगी बालमा, धारूं कीकर धीर।।
धणी : पतळी भली पारवती, साजो राख सरीर।
हींडौ देवण हेत रो, बेगो होवूं व्हीर।।

धण : पिव बिन कैड़ा पैरणा, अंग चढै ना ओप।
निरखै कुण घर नार नै, आलिजो है अलोप।।
धणी : पांखां हुवै न पाधरी, उडणो किण विध होय।
करार भागो कामणी, मिळणो किमकर होय।।

धण : पान झड़ंता देख कर, पीळी पड़गी काय।
अेकर बिछड़्या कद मिलां, इतरो देय बताय।।
धणी : पान झड़ फेर पांगरै, कूंपळ नूंवी फूट।
म्हां मिलतां ई गोरड़ी, लावा लीजै लूट।।

धण : मीठा बोलै मोरिया, हिवड़ै हालै हूक।
आतो दिखै न आलिजो, चढगी ऊंचो टूंक।।
धणी : आडा अडग आडावळा, उपनै नहीं उपाव।
पड़तो गुड़तो पूगसूं, रखजै थोड़ो खटाव।।

धण : नेह रो निठ्यो नीरड़ो, तूंडो दिखै तळाब।
झंकर हुयगा झाड़का, उतरी आं री आब।।
धणी : नदियां खळकै नीर री, नाडा भरिजै धाप।
बरखा आयां बांठका, ओपै आपो आप।।

धण : पोह खांचतो खालड़ी, ठारी रहीज ठार।
पिव बसता परदेस में, हीयो गयो'ज हार।।
धणी : गाढ राखजै गोरड़ी, ओढो दूणा सौड़।
लावूं लकदक लोवड़ी, ठारी देवै छोड़।।
धण : शिवरात आइ सायबा, मुळकिया महादेव।
अरघ देवती अेकली, दरसै नह मम देव।।

धणी : अरघ भल देय ऐकली, बाबो आवै वेल।
करम कळीजो कामणी, खरा खरी रो खेल।।

धण : ओढूं किकर फागणियो, लेवूं कीकर लूर।
पिव परदेसां हालिया, बिलखै थांरी हूर।।

धणी : बिलख मती थूं बावळी, धीजो थोड़ो धार।
फूठर लावूं फागणियो, ओढो थे घरनार।।

धण : चाली सैयां चोवटै, धमचक मांडी जोर।
अळगा बसिया आलिजा, हियै ऊठी हिलोर।।

धणी : थावस राखो साजनी, दरसूं थारै देस।
हिळमिळ होळी खेलसां, नवला धारां वेस।।

धण : बसंत आयो बारणै, धरा बिलूंबै धान।
नैड़ी आई होळका, पिव बिन सूखै प्राण।।

धणी : बसंत लेय बधावणा, हियै राख नै हेज।
फलका पोवो फूठरा, जीमण करूं न जेज।।

धण : जन्म दुखियारी जाणलो, बधियो घणो बिजोग।
फरको जात फागणियो, मिलण करो संजोग।।

धणी : आधै फागण आवसूं, हेज करूं अणपार।
रुच-रुच भेळा जीमसां, हेत तणी मनवार।।

धण : आलिजा बिना अणमणी, फागणियो दिन चार।
अंतस पीड़ा ओळखो, बादीला भरतार।।

धणी : सोवन थाळ सजायलो, सज सोळै सिणगार।
आतो दीखै आलिजो, अंतस करण उद्धार।।

धण : होळी भल मंगळीजै, लागै म्हारै झाळ।
पिव मोरा पास नहीं, जूझूं अत जंजाळ।।

धणी : छोडो गोरी जूझणो, हियै राखो विस्वास।
हिळमिळ रमसां हेत सूं, होळी बणसी खास।।

धण : चहकी चिड़िया चौक में, बंध्या म्हारा बैण।
पंख बिहूणी प्रीतड़ी, निबळा हूया नैण।।

धणी : निबळी हू मत नारड़ी, आंख्यां राख उघाड़।
पंख लगावूं प्रीत रा, आभै देत उडाय।।

❖❖

ISSN : 2320-0995

अब्दुल समद 'राही'

(अेक)

मिनखां रो है काळ अठै
सूनो है पंपाळ अठै

निजरां म्हारी काची कोनी,
जगां-जगां है जाळ अठै

खूंटी ताण सोया नैछै सूं,
पेंदै पड़गी माळ अठै

कांई सोजो आज भलां,
लाधा है कंकाळ अठै

थारा सुपना साचा व्हैगा,
लड़ियो है तिरकाळ अठै

(दोय)

आभै साम्हीं भाळ भायला,
लेख करम सूं टाळ भायला

धरती में सोनो गडियोड़ो,
उणनैं परो रुखाळ भायला

ठिकाणो :
प्रधान संपादक
'शबनम ज्योति'
सिलावटां रो मोहल्लो
ढाळ री गळी, सोजत सिटी
जिला-पाली 306104
मो. 9251568499

गुथमगाथी है जीवण में,
मकड़ी रो औ जाळ भायला

घोर अंधरा में जावणिया,
सूरज साम्हीं भाळ भायला

आव तपण दे डील तावड़ै,
आळस नैं मत पाळ भायला

बेवणियो इज पूगैला, पण
डांडी डांडी चाल भायला

(तीन)

प्रीत मनड़ै में जगा
दोस्त देवै है दगा

किण माथै विस्वास करां,
कोई नीं किण रा सगा

माल बेच उधार भाया,
खुद रै हाथ खुद नैं ठगा

अंधारै सूं बारै निकळ,
चांदणो थारै मन में जगा

छोड सुपना देखणा,
नींद आंख्यां री भगा

(च्यार)

जूण भलां खुसियां सूं भरलै,
लोगां री दौराई नैं हरलै

मंड जावै इतियास बगत रो,
इसड़ो थूं कीं कारज करलै

मिनखां री थूं फोड़'र आंख्यां,
क्यूं ढांढां रो चारो चरलै

रपट मती आथूणी दिस थूं,
धीरज हिवड़ै में ई धरलै

मरणो अवस पड़ैला आयां,
करियोड़ा पापां सूं डरलै

❖❖

ISSN : 2320-0995

दीनदयाल ओझा

म्हारी दीठ में 'उजास उच्छब'

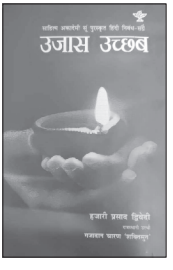

साहित्य संसार रा मानीता मनीषी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी बहु आयामी व्यक्तित्व रा धनी हा। इण साच नैं संसार रा सगळा साहित्यकार, साहित्य-स्नेही, मर्मज्ञ, समीक्षक अंतस सूं जाणै। सतत स्वाध्याय, साधना, मनन-चिंतन अर प्रामाणिकता रै सागै साहित्य री मोकळी विधावां में लेखन रै सागै-सागै भारतीय आर्स साहित्य री अनेक अणछुई विधावां तंत्र-मंत्र, योग, ज्योतिस, योग, नाथ अर सूफी साहित्य आद-आद विसयां माथै आपरो लेखन सोळवों सोनो है। जणै निरखो-परखो सौ टंच खरो सोनो है। इण अणमोल माळा रो अेक मणको निबंध-संग्रै रै रूप में है— आलोक पर्व, जिणरो लाखीणो राजस्थानी अनुवाद 'उजास उच्छब' सिरैनामै सूं कर्‌यो है राजस्थानी रा गैरा ज्ञानी, पुख्ता पारखू अर सिरैकार सिरजण सूं जुड़्योड़ा, जन्म सूं राजस्थानी सूं जुड़्योड़ा गुणी विद्वान डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'।

'उजास उच्छब' अनुवाद निबंध संग्रै रै 27 निबंधां नैं 'आलोक पर्व' ग्रंथ नैं आंख्यां आगै राख पढ्यो ई नहीं परख पण करी है। जिसा हजारी प्रसाद द्विवेदी लेखक, बिसा ई लाखीणी ललक रा धणी अनुवादक डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'। ओ ताळमेळ सोनै में सुहागो जिसो लाग्यो। अनुवाद, लेखण सूं सौरो कोनी, घणो दौरो है। औ काम दाठीक ई कर सकै, निबळो नीं। चारण तो गुणी-चतर रै सागै-सागै दाठीक हुवै ईज है। अेक आछै ओपतै अनुवादक जका गुण हुवणा चाईजै बै सगळा गुण डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' में प्रकृति प्रदत्त है। म्हनैं लागै डॉ. चारण राजस्थानी साहित्य रो भक्ति साहित्य, शृंगार साहित्य, वात साहित्य, प्रबंध काव्य, खंडकाव्य, लोकवार्तावां, सबदकोस, पर्याय

ठिकाणो :
साहित्य साधना सदन
केला पाड़ा
जैसलमेर 345001
फोन : 02992-252576

कोस, संतवाणी, माघ भड्डली, आयुर्वेद, वीर साहित्य, लोक कहावतां आद-आद रो गैरो अध्ययन कर अंतस अंवेर राख्यो है। इत्तै उत्तम अध्ययन में अेक-दूजै सूं रळियोड़ा-मिल्योड़ा विसय तो सहजता सूं जुड़ै ईज। इण सबळी सरावण जोग ज्ञान री गैरी पूग सागै 'उजास उच्छब' री अेक-अेक ओळ, अेक-अेक सबद कठ री माळा में जड़ाऊ मणि रतनां सो ओपै, आब पावै।

अनुवादक सारू आ जरूरी है कै वो जिण सिरजक रै सिरजण विसय रो अनुवाद करै उणरै वयक्तित्व री मांयली-बारली सगळी गत नैं आछी तरै ओळखै, जाणै, पूरण रूप सूं पिछाणै अर सिरजण विधा रो पण गैरो ज्ञान राखै। उणरी आतमा सूं अेकाकार हुय जावै। द्विवेदी जी अर चारण जी रै अंतस जुड़ाव बाबत डॉ. चारण लिखै, ''विद्यालय अर महाविद्यालयां री भणाई करतो अर उणरै बाद पैली विद्यालय में अर पछै महाविद्यालय में टाबरां नैं पढावती वेळा द्विवेदी रा निबंध म्हारी चाहत रा केंद्र बणता गया। अेक दिन साहित्य अकादेमी सूं पुरस्कृत पोथ्यां री सूची पढतां वांरै सबसूं छेहलै निबंध संग्रै 'आलोक पर्व' रो नांव आगै आयो अर म्हैं इण संग्रै रै निबंधां नैं नूंवै सिरै सूं पढणा सरू करया। इणी टैम आं निबंधां रै राजस्थानी रूपांतरण रो मन बण्यो।''

इण अकूल हिवड़ै री हुलस अर गैरै ज्ञान री साधना साध 'आलोक पर्व' रो अनुवाद 'उजास उच्छब' रै रूप में हुयो है। उणरै अध्ययन सूं लागै कै हजारी प्रसाद द्विवेदी अर डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' दोनूं अेक रूप होयग्या है। साच तो आ है कै 'आलोक पर्व' रा 27 निबंध सताईस नखत है, तो डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' उण नखतां रो 'उजास उच्छब' रै रूप में साचा द्रष्टा, व्याख्याता (उल्थाकार रै रूप में) है। म्हनैं लागै कै जे हजारी प्रसाद द्विवेदी जींवता हुवता तो डॉ. गजादान नैं हेत-रजत रो हाथी भेंट कर डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' नैं भी कर जोड़ घणै मान अंतस सूं आसीसो देय आदर देंवता। राजस्थानी में कैवत है कै 'कूवै में हुवै जिसो खेळी में आवै' अर 'पेटै हुवै जिसी ई होठां आवै'। कवियां बाबत कैयो जावै 'और कवि घड़िया, नंददास जड़िया'। इण ऊपरली ओळ्यां रो उदाहरण देय आ बात कैवणी चावूं कै डॉ. चारण रै कनै राजस्थानी रो ओपतो अर भांत-भांत रै सबदां रो विसयानुकूल भंडार नीं हुवतो, सबद रै जुड़ाव री जुगत नीं हुवती तो इसै ओपतै ललित निबंधां रो अजरो अनुवाद नीं हुवतो। अनुवादक री भासा वैण-सगाई अलंकार सूं जुड़्योड़ी है। वांरै अंतस में विसयानुकूल सबद भंडार है। सबद-सबद रै मरम नैं समझण री सरावणजोग सूझ है। सबद जड़ाव री प्रकृति-प्रदत्त शैली-शिल्प है। गुणान्वेषण प्रकृति वांरै अंतस रची-पची है। उदाहरण नीं देय पा रैयो हूं क्यूंकै किसै रूड़ै रूपाळै सबद नैं छोडूं। म्हैं तो वांरै छोटी ऊमर रै पाकै ज्ञान रो अभिनंदन करूं, नमन करूं।

❖❖

पोथी : उजास उच्छब / लेखक : हजारी प्रसाद द्विवेदी / राजस्थानी अनुवाद : डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' / प्रकाशक : साहित्य अकादेमी, दिल्ली / संस्करण 2019 / पाना : 204 / मूल्य : 250 रुपिया